खण्ड– 07 सत्र–01 (भाग–5) / अंक – 08

शुक्रवार 18 दिसम्बर, 2020 / 27 अग्रहायण, 1942 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

पहला सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–07 (भाग–1) में अंक 07 से अंक 08 सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग
EDITORIAL BOARD

सी. वेलमुरुगन
सचिव
C. VELMURUGAN
Secretary

एम.एस. रावत
उप सचिव (सम्पादन)
M.S. RAWAT
Deputy Secretary(Editing)

विषय–सूची

सत्र–1 (5) शुक्रवार 18 दिसम्बर, 2020 /27 अग्रहायण,1942 (शक) अंक–08

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	**2–3**
2.	सदन में अव्यवस्था	**4–5**
3.	अल्पकालिक चर्चा (नियम–55)	**6–64**

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

सत्र–1 (5) शुक्रवार 18 दिसम्बर, 2020 / 27 अग्रहायण,1942 (शक) अंक–08

दिल्ली विधान सभा

उपस्थित सदस्यों की सूची (फाइनल)

1	श्री अजेश यादव	16	श्री जितेन्द्र महाजन
2	श्री अखिलेशपति त्रिपाठी	17	श्री करतार सिंह तंवर
3	श्रीमती ए. धनवती चंदेला ए.	18	श्री कुलदीप कुमार
4	श्री अजय दत्त	19	श्री महेन्द्र गोयल
5	श्री अभय वर्मा	20	श्री मुकेश कुमार अहलावत
6	श्री अनिल कुमार बाजपेयी	21	श्री मदन लाल
7	श्री अब्दुल रहमान	22	श्री मोहन सिह बिष्ट
8	श्री अजय कुमार महावर	23	श्री नरेश बाल्यान
9	श्रीमती बंदना कुमारी	24	श्री ओम प्रकाश शर्मा
10	सुश्री भावना गौड़	25	श्री पवन शर्मा
11	श्री भूपेन्द्र सिंह जून	26	श्रीमती प्रीति जितेन्द्र तोमर
12	श्री धर्मपाल लाकड़ा	27	श्री प्रहलाद सिंह साहनी
13	श्री गिरीश सोनी	28	श्री प्रवीण कुमार
14	मो0 हाजी युनूस	29	श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
15	श्री जय भगवान	30	श्री प्रकाश जारवाल

31	श्री ऋतुराज गोविन्द	42	श्री सही राम
32	श्री राजेश गुप्ता	43	श्री एस.के. बग्गा
33	श्री राज कुमार आनन्द	44	श्री सुरेन्द्र कुमार
34	श्री राजेश ऋषि	45	श्री विजेन्द्र गुप्ता
35	श्री राघव चड्ढा	46	श्री विशेष रवि
36	श्री रोहित कुमार	47	श्री विनय मिश्रा
37	श्री शरद कुमार चौहान	48	श्री विरेन्द्र सिंह कादयान
38	श्री सोम दत्त		
39	श्री शिव चरण गोयल		
40	श्री सोमनाथ भारती		
41	श्री सौरभ भारद्वाज		

सदन पूर्वाह्न 11.08 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

सदन में अव्यवस्था

श्री कुलदीप कुमार: अध्यक्ष महोदय, पहले 2500 करोड़ रुपये की सी.बी.आई. जांच की हम लोग मांग करते हैं। 2500 करोड़ रुपये का जो घोटाला एम.सी.डी. के अन्दर हुआ है, उसके लिए हम सी.बी.आई. जांच की मांग करते हैं।

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, बैठिए।

श्री कुलदीप कुमार: सबसे पहले हम सी.बी.आई. जांच की मांग करते हैं इसके लिए 2500 करोड़ रुपये के घोटाले के लिए।

माननीय अध्यक्ष: बैठिए, प्लीज़ बैठिए।

श्री कुलदीप कुमार: अध्यक्ष महोदय, पहले सर 2500 करोड़ के घोटाले की जांच होगी, इसकी मांग हम लोग करते हैं और उसके।

माननीय अध्यक्ष: कार्यवाही तो शुरू करने दीजिए।

श्री कुलदीप कुमार: सबसे पहले।

सुश्री राखी बिरला(माननीय उपाध्यक्ष): नहीं, अध्यक्ष जी, यह बहुत गंभीर मुद्दा है।

श्री कुलदीप कुमार: ये दिल्ली के लोगों के टैक्स के पैसे से जुड़ा हुआ मुद्दा है। अध्यक्ष महोदय, सफाई कर्मचारियों की सेलरी का मुद्दा है ये। जो 2500 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है, इस घोटाले से सफाई कर्मचारियों की सेलरी दी जा सकती थी। इससे दिल्ली का प्रबंध ठीक हो सकता था। जो रोना आज ये रोया जा रहा है, ये 2500 करोड़ के घोटाले को रोने के लिए किया जा रहा है।

माननीय अध्यक्ष: अरे! सौरभ जी को अपना विषय तो रखने दीजिए एक बार।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः अल्पकालिक चर्चा नियम 55।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः सौरभ जी को विषय तो रखने दो एक बार।

...(व्यवधान)

श्री कुलदीप कुमारः पहले 2500 करोड़ रुपये की जांच होगी अध्यक्ष महोदय, पहले 2500 करोड़ रुपये के घोटाले की जांच की जाए।

माननीय अध्यक्षः भई सौरभ जी को विषय रखने दीजिए एक बार।

श्री कुलदीप कुमारः बी.जे.पी. वालों ने पीछे 2500 करोड़ रुपये का घोटाला किया है दिल्ली के लोगों के लिए।

...(व्यवधान)

(सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजीं)

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ, अपने–अपने स्थान पर बैठें।

(सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजीं)

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ कृपया अपने–अपने स्थान पर बैठें।

(सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजीं)

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ कि वो अपने–अपने स्थान पर बैठें। माननीय सदस्य अपने–अपने स्थान पर बैठें।

(सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों द्वारा नारेबाजीं)

माननीय अध्यक्षः नाम मत लीजिए प्लीज़। आप डिप्टी स्पीकर हैं, नाम मत लीजिए।

(सत्ता पक्ष के लोग नारे लगा रहे हैं)

माननीय अध्यक्षः सदन की कार्यवाही 15 मिनट के लिए स्थगित की जाती है।

सदन पूर्वाह्न 11.30 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय (श्री राम निवास गोयल) पीठासीन हुए।

अल्पकालिक चर्चा (नियम–55)

माननीय अध्यक्षः अल्पकालिक चर्चा नियम 55। श्री सौरभ भारद्वाज जी दिल्ली के नगर निगमों में वित्तीय कुप्रबंधन और 2500 करोड़ रुपये के कथित घोटाले के संबंध में चर्चा प्रारम्भ करेंगे।

श्री सौरभ भारद्वाजः जी, अध्यक्ष जी, बहुत–बहुत धन्यवाद कि इस विषय पर बोलने का मौका आपने मुझे दिया। अध्यक्ष जी, अपनी बात शुरू करने से पहले आपसे एक निवदेन करना चाहता हूँ कि दिल्ली के बॉर्डर पर जो किसान हैं, उसमें से करीब 21 किसानों की जान चुकी है और वो देश के लिए अपनी जान दे रहे हैं। कहा जा सकता है कि वो देश के लिए अपनी शहीदी दे रहे हैं। हम लोग यहाँ सदन चला रहे हैं तो अगर आपकी अनुमति हो और आप इसको ठीक समझें तो इस सदन के अन्दर उन किसानों के लिए उन संतों के लिए दो मिनट का मौन जो है।

माननीय अध्यक्षः वो कल हो चुका सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः उनके लिए।

माननीय अध्यक्षः कल हो चुका है मॉर्निंग में।

श्री सौरभ भारद्वाजः उनके लिए हुआ है?

माननीय अध्यक्षः हाँ, कल हो चुका है। कल हो चुका है।

श्री सौरभ भारद्वाजः वो संत जो थे, उनके लिए हुआ। आज जो पंजाब से।

माननीय अध्यक्षः नहीं, नहीं सौरभ जी, आप इसी विषय पर आइए प्लीज़।

श्री सौरभ भारद्वाजः ठीक है, ठीक है। सर, आज जो पंजाब से हमारे एम.एल.एज़ थे, उनका निवदेन था तो मैंने सोचा आप तक इसको पहुंचाऊँ।

माननीय अध्यक्षः नहीं, वो कल हो चुका है। कल सदन की कार्यवाही शुरू करने से पहले।

श्री सौरभ भारद्वाजः जी। जी, अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः दो मिनट का मौन रख चुके हैं।

श्री सौरभ भारद्वाजः जी, तो मैं विषय के ऊपर आता हूँ अध्यक्ष जी। आज इस चर्चा को इस सदन के अन्दर इसलिए लाना पड़ा अध्यक्ष जी, मेरे साथ हमारे सारे विधायक साथी हैं और वो 2017 को अगर याद करें तो 2017 के अन्दर जब नगर निगम के चुनाव थे तो एक नारा आप सब लोगों को याद होगा। 'नए चेहरे, नई ऊर्जा, नई उड़ान, दिल्ली मांगे कमल निशान।' ये नारा जो है हमारे भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने दिल्ली को दिया था और जब ये नारा दिया गया था तो ये कहा गया था और भाजपा के अन्दर ये सोच रही थी कि उनके जो उस समय के पार्षद थे, वो जनता के अन्दर काफी ज्यादा बदनाम थे। लोग उनको वोट देने के लिए तैयार नहीं थे। दिल्ली के लोग नगर निगम से बहुत परेशान थे, चाहे वो सड़क का मामला हो, साफ–सफाई की व्यवस्था हो, कूड़े का निपटारा हो, पार्कों का रख–रखाव हो, आवारा पशुओं का प्रबंधन हो, हर चीज़ कोई काम आप कर लें, आपकी कॉलोनी की सड़कें हों, सब चीज़ों से लोग इतने परेशान थे और अपने भाजपा के पाषदों से इतने दुःखी थे कि भाजपा के अपने सर्वे के अन्दर यह आया कि अगर हमने अपने पाषदों को दोबारा चुनाव लड़ाया तो ये बुरी तरह हारेंगे, लोग इनसे बहुत ज्यादा दुःखी हैं, नफरत करते हैं और भाजपा ने उनके भ्रष्टाचार के चलते ये कहा कि हम अपने सारे के सारे पाषदों को बदल देंगे और उस वक्त दिल्ली के भाजपा के जो प्रदेश अध्यक्ष थे; मनोज तिवारी जी, उन्होंने रात को साढ़े दस बजे से लेकर सुबह साढ़े पांच बजे तक एक गाना लिखा। बताया जाता है कि उन्होंने खुद लिखा उसका संगीत भी उन्होंने दिया, सब

कुछ उन्होंने किया उसका। और ये गाना जो है दिल्ली के अन्दर चलाया गया; **;नए** चेहरे, नयी ऊर्जा, नई उड़ान दिल्ली मांगे कमल निशान। अध्यक्ष जी, बहुत दुःख के साथ कहना पड़ रहा है। हालांकि ये हमारे राजनीतिक प्रतिद्वंदी भी हैं मगर क्योंकि हम दिल्ली के विधायक हैं और दिल्ली के लोगों की समस्या लगभग रोज़ सुननी पड़ती है ज्यादातर समस्याएं जो हम विधायकों के पास आती हैं और मुझे लगता है सब पार्टी के लोग इसको मानेंगे। ज्यादातर समस्याएं जो है, एम.सी.डी. की हैं, नगर निगम की हैं और लोग दिल्ली नगर निगम से बहुत परेशान हैं। चाहें वो बिल्डिंग डिपार्टमेंट हो, सेनिटेशन डिपार्टमेंट हो, कूड़े का रख–रखाव हो, टूटी हुई सड़कें हों और जो सबसे बड़ी बात ये है, जो भ्रष्टाचार है, जो पैसे का गोलमाल है, जो घोटाले जो एम.सी.डी. के अन्दर रोज़ सामने आते हैं, लोगों को ऐसा लगता है और मेरा भी ये मानना है अध्यक्ष जी, कि पुराने पाषर्दों ने तो जो लूटमार की, वो की, मगर ये जो नए पार्षद आए चुनकर और ये जो नई एम.सी.डी. चुनकर आयी तीनों नगर निगम के अन्दर, उन्होंने भ्रष्टाचार के घोटाले के सारे पुराने रिकॉर्ड जो हैं, तोड़ दिए। मतलब ये पुरानों से भी आगे निकले और ये बात बी.जे.पी. के नेता भी अक्सर अपनी रैलियों के अन्दर लोगों के आगे बात मान लेते हैं। विजय गोयल जी ने ही कुछ दिनों पहले जब संसद का चुनाव चल रहा था तो उनको लोगों ने कहा, उन्होंने बोला भई, हाँ भई, ये बात तो हम मानते हैं कि हमारे जो लोग हैं, बड़े भ्रष्ट हैं तो अब ये भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए हमने एक सीरीज़ शुरू की अध्यक्ष जी, क्योंकि हम ये मानते हैं कि 181 भाजपा के पार्षद जो चुनकर आये और जो एम.सी.डी. बनी, उसने भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। नई–नई भ्रष्टाचार की, घोटाले की स्कीमें आप उनके अन्दर पा सकते हो। हमने एक स्कीम शुरू की, हमने एक सीरीज़ शुरू की भ्रष्टाचार की, उसको हमने नाम दिया; भाजपा 181। इनके 181 पार्षदों को ध्यान में रखकर भ्रष्टाचार की 181 स्कीमों का उजागर हम पिछले कुछ दिनों से कर रहे हैं, कुछ स्कीमों का हम उजागर कर चुके हैं।

अध्यक्ष जी, आप देख रहे होंगे कि कुछ दिनों से भाजपा के एम.सी.डी. के मेयर और पार्षद मुख्य मंत्री जी के यहाँ धरने पर बैठे हुए हैं। अध्यक्ष जी पुराने समय के अन्दर ऐसा देखा जाता था कि जब बेटी का ब्याह करते थे तो कई जगह दूसरे घर में

लालची सास होती थी। उसके पास सिर्फ एक ही काम होता था, और पैसा ला, और पैसा ला, और पैसा ला। दिल्लीवालों ने और दिल्ली सरकार ने अपनी बेटी एमसीडी, क्योंकि ये हमारी बेटी की तरह की थी, दिल्ली की बेटी की तरह थी एमसीडी, हमने गलत जगह ब्याह दी, बीजेपी को दे दी। और ये जो बीजेपी है, कोई बात नहीं, मैं बता रहा हूँ, और जो बीजेपी है, ये इतनी लालची सास है, ऐसी सास होती थी, हमारे वक्त में, पहले बताते थे कि लोग मिट्टी का तेल डाल के बहू जला देते थे दहेज के चक्कर में, और लाओ... और लाओ... और लाओ। अब दिल्ली की मजबूरी ये है, दिल्ली की मजबूरी ये है कि हमने अपनी बेटी... अपनी एमसीडी इनको दे दी। और जो सास है, बहुत लालची है। शुरूआत हुई स्कूटर से, जब हम नये–नये आये थे 2014 में तो इन्होंने स्कूटर मांगा, वेस्पा का मांगा या बस्पा का मांगा... वेस्पा का, इनको स्कूटर दे दिया। क्योंकि बेटी का मामला है, बेटी का अच्छा हम चाहते थे, हमने इनको स्कूटर दे दिया। स्कूटर से लालची सास का पेट नहीं भरा, मोटरसाइकिल दे दो, मोटर साइकिल दे दी। फिर ये बुलेट मांगने लगे, इन्हें बुलेट भी दे दी। अब ये कार मांग रहे हैं, हमने इनको मारूति 800 भी दे दी। फिर इन्होंने शोर मचाना शुरू किया। भई नहीं, अब तो बड़ी कार लेंगे। नहीं, मर्सिडीज का मामला नहीं था इनका, ये अब आये स्कॉर्पियो के ऊपर, भई स्कॉर्पियो लेंगे तो तुम्हारी बेटी को सुखी रखेंगे

वर्ना दुःखी करेंगे, प्रताड़ना करेंगे, लालची सास है। लालच कभी घटता नहीं। तो इन्होंने आपस में रिश्तेदारों ने मीटिंग करी, कही, ''भई स्कॉर्पियो मांगेंगे इस बार।'' तो इनके यहाँ बड़े–बड़े लोग हैं, बड़े–बड़े राजनीतिक लोग हैं। इन्होंने कहा, ''देखो, स्कॉर्पियो मांगोगे न, तो हो सकता है कोई छोटी गाड़ी मिले, कोई बड़ी गाड़ी सोचो और उसकी मांग के ऊपर टिक जाएंगे कि ये दोगे तभी तुम्हारी बेटी सुखी रखेंगे वर्ना जला देंगे तेल डालके।'' तो इन्होंने जैसा कि राखी बहन बता रही हैं, इन्होंने कहा कि मर्सिडीज मांगते है। अब इन्होंने सोचा मर्सिडीज मांगते है और मर्सिडीज के बारे में चिट्ठी सारे रिश्तेदारों को लिख देते है कि भई मर्सिडीज नहीं दोगे तो तुम्हारी बेटी को जलाके मार देंगे, मर्सिडीज दो। सब रिश्तेदारों के अंदर बात चली गई कि जी, लालची सास मर्सिडीज मांग रही है। इनको क्या लगा कि इससे तो हमारी प्रसिद्धि हो रही है, रिश्तेदार फोन कर रहे हैं अरे भई मर्सिडीज मांग रहे हो?

हां जी, मर्सिडीज मांग रहे है वर्ना नहीं मानेंगे, इस बार मर्सिडीज ही मांगेंगे। तो अब ये मामला ऐसा हो गया कि हमारा जो मामला है, जो दिल्लीवाले लोग हैं जिन्होंने अपनी बेटी इनको दे दी, वो कह रहे हैं तुम बेटी वापस दे दो, हमें ना ब्याहनी तुमसे, हमारी बेटी हमें वापस दे दो, तुम्हारे यहाँ नहीं रखनी और तुम्हारा पेट नहीं भरना क्योंकि अगर मर्सिडीज भी दे दी तो तुम कहोगे अब मुझे जेट दे दो, तो इनको क्या इस बात से चिढ़ हो गई। अब इस लालची सास ने क्या कहा कि एक काम करेंगे, इनको बदनाम करने के लिए पूरे शहर में होर्डिंग लगा देंगे, मर्सिडीज नहीं दी तो बेटी जला देंगे। तो ऐसे ही इन भाजपा वालों ने किया, 13 हजार करोड़! ये कौन है, कहाँ से ये फिगर आई, ये किसी को नहीं पता, इन्होंने ये होर्डिंग्स सारे में लगा दिये, पोस्टर लगा दिये, रोज अखबार में कहने लगे, '' भई, 13 हजार करोड़ रुपये दो, 13 हजार करोड़ रुपये दो, 13 हजार करोड़ रुपये दो। और इनको लग रहा है, इससे प्रसिद्धि हो रही है और इन्हें ये नहीं पता कि लोग इनके ऊपर हंस रहे हैं कि भई तुम्हारा काम था कि जो बेटी तुमको ब्याही उसका ध्यान रखो। उसको पालो–पोसो, उसको अपना समझो। और इन्हें ऐसा लग रहा है कि किसी की लड़की आ गयी तो अब उसके ऊपर दबाव बनाओ, उसके ऊपर प्रताड़ना करो, उसको यातना दो, उसको ब्लैकमेल करो क्योंकि लड़की का बाप तो देगा ही देगा। क्योंकि उसको तो अपनी लड़की को जो है, अच्छा उसका भला चाहे। तो हम भाजपा के लोगों को कह रहे हैं कि भई, हमें तुम्हारे चाल–चलन के बारे में पहले ही पता था, दिल्ली वाले यही कह रहे हैं कि चाल–चलन तो तुम्हारा हमें पहले ही पता था कि तुम गड़बड़ हो मगर तुमने आखिरी वक्त पर दूल्हा बदल दिया, 2017 में और गलती से शादी कर दी उसकी और अब इनकी सारी की सारी सच्चाई हमारे सामने आ गयी। तो आप हमारी लड़की वापस दे दो। तुमसे ब्याह दी थी गलत कर दिया था, ये वापिस कर दो। तुम्हें नहीं देंगे 13 हजार करोड़ रुपये, तुम्हारे बनते ही नहीं।

अब अध्यक्ष जी, ये 25 हजार, ये जो ढ़ाई हजार करोड़ की बात है, मेरे को इस चीज के ऊपर बहुत ऐतराज है कि ढ़ाई हजार करोड़ रुपया तो बहुत कम जो है, इनके ऊपर घोटाले की बात करी जा रही है, इनका घोटाला तो कई हजार करोड़ रुपये का है।

अध्यक्ष जी, मेरे को आप तीन मिनट और दीजियेगा, मैं एक बात, छोटी सी बात इनके एक विभाग के बारे में समझाऊंगा। और मुझे लगता है कि हमारे जितने विधायक हैं, चाहे वो भाजपा से हों, चाहे वो आम आदमी पार्टी से हों, वो इस बात को खुद मान ले कि ये बात बिल्कुल सच है। अध्यक्ष जी, इनका एक डिपार्टमेंट है जिसको बिल्डिंग डिपार्टमेंट कहते है, बिल्डिंग डिपार्टमेंट का असली काम क्या है, ये मैं भी नहीं जानता अब तक। विधायक होने के बावजूद भी कि इनका काम क्या है असली। मगर इनका जो प्रैक्टिकल काम है, वो ये है किसी भी गाँव में, किसी भी कच्ची कॉलोनी में, किसी भी कोठियों वाली कॉलोनी के अंदर, किसी भी फ्लैटों में एक जगह आदमी अगर 15 ईंट भी खरीद लाये, आधा बोरी सीमेंट भी कोई खरीद लाये तो पता नहीं, इनके जेई को कहाँ से पता चलता है, सूंघता हुआ, सूंघता हुआ उसके घर पहुंच जाता है और इनका बेलदार कहता है, हाँ जी, कितने लेंटर डालोगे। जितने लेंटर डालोगे, हर लेंटर का रेट बंधा हुआ है, कहीं पे तीन लाख रुपये एक लेंटर का है, कहीं ढ़ाई लाख रुपये एक लेंटर का है, कई जगह एक लाख रुपये एक लेंटर का है। 5 लाख भी है, वो कहां पे है? तो इनकी रेट लिस्ट, तो जी, देखो सारे, विधायकों को इनकी रेट लिस्ट पता है। इन्हें भी पता है, ऐसा नहीं है कि हमें ही पता है। और अध्यक्ष जी, सबसे बड़ी बात ये है दिल्ली के हर आदमी को पता है क्योंकि कभी न कभी, किसी न किसी ने या तो अपना मकान बनाया है या उसके रिष्तेदार ने मकान बनाया है या उसके पड़ोस में मकान बन रहा है तो पार्कों में, पार्टियों में, चाय की दुकान में, ऑफिसों में ये चर्चा होती है कि मैं मकान बना रहा था, पार्शद के यहाँ से आदमी आ गया या एमसीडी का बेलदार आ गया या जेई के फोन आने षुरू हो गये कि जी, क्या बना रहे हो, कितना बना रहे हो? ऐसे तो नहीं बनने देंगे। ये बात सबको पता है।

तो सिर्फ बिल्डिंग डिपार्टमेंट के ही... छोटा सा मैंने आँकड़ा निकाला है, अध्यक्ष जी, सैम्पल करा है। मेरे यहाँ दो एरिया हैं; एक खिड़की एक्सटेंषन है, एक चिराग दिल्ली है। दोनों के अंदर लगभग 17–18 हजार वोट हैं और मैंने वहाँ पे ऐवरेज निकाली, एक साल के अंदर लगभग वहाँ पे 100 बिल्डिंग बनके तैयार होती हैं, करीब 17–18 हजार वोट के ऊपर 100 बिल्डिंग एक साल में बनके तैयार होती हैं। इसको अगर हम बड़ा कर दें, 1 लाख 80 हजार की आबादी के ऊपर जो कि मेरी कांस्टीट्यूएंसी

का साइज है, उसपे हम ये मान सकते हैं कि लगभग एक हजार बिल्डिंग एक महीने में बनके तैयार होती हैं। और अच्छी फीगर ये है कि 18 हजार को अगर और बड़ा कर दें, 1 करोड़ 80 लाख की आबादी के साथ इसको आप ऐक्सट्रापोलेट कर दें तो हमने देखा, 10 हजार बिल्डिंग, 1 लाख बिल्डिंग... माफ कीजियेगा अध्यक्ष जी, 1 लाख बिल्डिंग इस दिल्ली के अंदर 1 साल में बनती हैं, ये मोटा–मोटा ऐवरेज है। अब एक कीर्तिमान अभी–अभी भाजपा ने स्थापित किया। अब ये रेट कैसे तय करे? कोई कह रहा है 5 लाख रुपये लेते हैं एक छज्जे के, कोई कह रहा है 3 लाख लेते हैं एक छज्जे के। एक लेंटर की बात कर रहा हूँ अध्यक्ष जी। तो अगर 5 लाख भी अगर ये एक लेंटर का लेते हैं और 3 लेंटर किसी ने डाले तो 15 लाख हो गये, एक बिल्डिंग से। और अब बता रहे हैं कि कई जगह 5 लेंटर डलते हैं। तो 5 लाख अगर एक लेंटर का है तो 5 लेंटरों के 25 लाख हो गये और अगर 1 लाख एक लेंटर का है तो 5 लेंटरों के 5 लाख हो गये।

और अभी 2 हफ्ते पुरानी बात है भाजपा के वसंत कुंज के काउंसलर थे मेहलावत साहब, किसी सरकारी बड़े अफसर की बिल्डिंग बन रही थी वसंत कुंज में। ये पैसे मांग रहे थे, सरकारी अफसर ने सीबीआई में कम्पलेंट कर दी। अफसर बहुत तेज था, उसने बोला, ''एमसीडी का जेई पैसे मांग रहा है और रंगे हाथ पकड़वाऊंगा।'' तो क्योंकि अफसर था, आईएएस अधिकारी था, सीबीआई दबाव में थी और सीबीआई ने कहा कि इनका एक जेई पकड़ लेंगे, क्या फर्क पड़ता है, ये कोई बदनाम कोई न हो सकते हैं इससे ज्यादा। भई इससे ज्यादा क्या बदनाम हो जाएंगे। सबको ही पता है। सीबीआई ने ट्रैप डाल दिया। अध्यक्ष जी, 10 लाख रुपये बिल्डिंग बनाने के लिए नकद लेते हुए भाजपा के पार्शद रंगे–हाथों पकड़े गये, रंगे–हाथों। ...(व्यवधान) भागने की कोषिष करी, एक आध को धक्का मारा, दूसरे को धक्का मारा, आगे पूरी टीम खड़ी थी, उन्होंने पकड़ लिया।

अध्यक्ष जी, मजेदार बात ये है कि सीबीआई को बहुत देर तक ये पता ही नहीं चला कि ये जो है, क्योंकि वो भागने की कोषिष कर रहा था तो सीबीआई ने उसको कूट भी दिया, जोकि मुझे पता चला, ये सोच के कि एक तो जेई, ऊपर से भागने की कोषिष कर रहा है, वो तगड़ा है थोड़ा काउंसलर, तो उसको कूट वूट दिया... क्या

भूस भर दिया, जो भी है, उसको कर दिया उन्होंने। तो वो ये बता भी नहीं पाया कि मैं भाजपा का काउंसलर हूँ और ये उसको पकड़ पकड़ के ले गये। अब क्या है कि क्योंकि मारपीट हो गई तो लोगों को पता चल गया, आसपास ये खबर फैल गयी कि भई पकड़ लिया, काउंसलर पकड़ लिया हमारा। अब सीबीआई... सीबीआई पहुंची, ऊपर से आया फोन कि भई, तुम्हें षर्म नहीं आती, यही सीखा है तुमने इतने सालों में, हमारा ही काउंसलर पकड़ लिया तुमने। अब सीबीआई करे तो करे क्या? सीबीआई ने कोई प्रेस रिलीज नहीं दी, किसी रिपोर्टर को नहीं बताया, चुपचाप, अब क्योंकि पकड़ लिया है, वापिस ले गये हैं, सुबह–सुबह कोर्ट में पेष करना था। अध्यक्ष जी, कोर्ट के रिपोर्टरों तक को नहीं पता था सीबीआई को कवर करने वाले, एमसीडी को कवर करने वाले रिपोर्टरों को कि आज काउंसलर को पेष करना है। वो तो हमें इनके, एमसीडी के ही एक भाजपा के पार्शद ने कागज भेज दिये और फिर हमने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी। मैंने जब प्रेस कॉन्फ्रेंस करी कि अभी थोड़ी देर में सीबीआई कोर्ट के अंदर इनका पार्शद 10 लाख रुपये लेते हुए जो पकड़ा गया था, उसको पेष करेंगे तो उसके एक घंटे बाद सीबीआई ने ट्वीट करके कहा कि हाँ, कुछ ऐसा हुआ है। उसके बारे में प्रेस कॉन्फ्रेंस अभी तक नहीं की। वर्ना सीबीआई तो अगर चूहे का बच्चा भी पकड़ लेती हैं ना तो तीन बार प्रेस कॉन्फ्रेंस करती है, आज हमने पकड़ लिया, आज हम इससे पूछताछ करेंगे, आज हम इसके भाई को उठायेंगे, आज इसकी पत्नी से पूछताछ करेंगे। अब ये पता करेंगे कि ये ड्रग्स लेता था या नहीं लेता था। अब ये पता करेंगे किस–किस से मिलता था। आज इसने जमानत लगायी। आज इसकी जमानत खारिज हो गयी। आज इसने दुबारा लगायी, आज फिर से खारिज हो गयी। रोज रोज सीबीआई जो है, माइक के सामने बैठके ये काम करती है मगर इसमें नहीं की। तो अध्यक्ष जी, यहाँ से एक रेट डायरेक्ट भाजपा से मेरे सामने आ गया; 10 लाख रुपये का रेट ले रहे थे। ये तो इनका रेट है वर्ना ये कहेंगे कि जी, ये सौरभ ने अपने रेट इनके ऊपर थोप दिये, आम आदमी पार्टी वालों ने रेट इनके ऊपर थोप दिये। अध्यक्ष जी, 10 लाख रुपये इनका काउंसलर खुद लेते हुए पकड़ा गया। 10 लाख रुपये एक बिल्डिंग से लेते हो...

माननीय अध्यक्षः कन्क्लूड करिये सौरभ जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः मैं कर रहा हूँ अध्यक्ष जी। 10 लाख रुपये 1 बिल्डिंग से लेते हो, एक लाख...

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाजः अरे! अच्छा छोड़ दो, बहन छोड़ दो, छोड़ दो, अच्छा चल रहा है, छोड़ दो। अध्यक्ष जी, नहीं–नहीं, अध्यक्ष जी, मैं ये बात कह रहा हूँ कि देखिये 10 लाख रुपये 1 बिल्डिंग से लेते हैं और मैंने आपको आंकड़ा बताया है, एक लाख बिल्डिंग एक साल में दिल्ली में बनती हैं। मैं 10 लाख को भी कम करके एक लाख कर देता हूँ, मैं ये कह देता हूँ कि कई जगह कच्ची कॉलोनियों के अंदर 5 लाख रुपये ले लेते होंगे, कई जगह कोई, कई बार ऐसा आरएसएस का कनेक्षन निकल जाता है कि अरे ये तो हमारे ही हैं, चलो तुमको कन्शेसन दे दिया आठ लाख दे दो। मैं तो ये कह रहा हूँ कि इस दस लाख के भी रेट को मिट्टी डालो जो इनके रेट हैं, एक लाख पे आ जाओ। एक लाख रुपए भी अगर ये एक बिल्डिंग से लेते हों और एक लाख बिल्डिंग दिल्ली में एक साल में बनती हैं तो एक हजार करोड़ का घोटाला तो ये कागज पे करते हैं। एक हजार करोड़ का, एक साल में घोटाला करते हैं। वैसे ये रेट ज्यादा है, वैसे 10 हजार करोड़ बनते हैं।

माननीय अध्यक्षः चलिए, अब सौरभ जी, कन्क्लूड करिए।

श्री सौरभ भारद्वाजः और पांच साल का... अध्यक्ष जी बस मैं खत्म कर रहा हूँ और पांच साल का हो गया 5 हजार करोड़ और 14 साल से ये यहाँ पे हैं तो, 14 हजार करोड़ का घोटाला तो अध्यक्ष जी, मैंने बाकायदा सबूतों के साथ इस विधान सभा के सामने रखा है। तो जो ढ़ाई हजार करोड़ है, ये तो कन्शेसन दे रहे हैं इनको और अब इस घोटाले की जांच होनी चाहिए, दूध का दूध, पानी का पानी होना चाहिए, सफाई कर्मचारियों को ये तीन महीने से तनख्वाह नहीं दे रहे, डॉक्टरों, नर्सों की तनख्वाह इन्होंने बंद कर रखी है, सिर्फ इसलिए ताकि ये एक झूठी मांग, जो लालची सास बहू को तेल छिड़कर जलाने वाली सास, मर्सिडीज के पोस्टर लगा–लगा के कर रही है ताकि इनके ये मान लें कि भई इनको दे दे।

अध्यक्ष जी बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः थैंक्यू। रोहित मेहरोलिया जी।

श्री रोहित कुमारः बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः अच्छा एक सेकंड।

श्री सौरभ भारद्वाजः एक छोटा सा रोहित भाई।

अध्यक्ष जी, मैंने उसमें निवेदन किया था कि मैं सौरभ भारद्वाज, अध्यक्ष महोदय मैं अल्पकालिक चर्चा विषय वस्तु से संबंधित एक संकल्प प्रस्तुत करने के लिए इस सदन की परमिशन चाहता हूँ।

माननीय अध्यक्षः परमिशन दी जाती है।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष जी, मैं सबकी सहमति से इस संकल्प को पढ़ देता हूं। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली की विधान सभा दिनांक 18 दिसम्बर, 2020 को आयोजित अपनी बैठक में संकल्प करती है कि यह सदन खेद पूर्वक यह विचार करता है कि दिल्ली के लोग पिछले 14 वर्षों से दिल्ली के नगर निगमों **के** शासन कर रही है। दिल्ली के लोग पिछले 14 साल से दिल्ली के नगर निगमों का शासन कर रही पार्टी से बहुत नाराज हैं। नगर निगमों में भ्रष्टाचार की सभी सीमाओं को पार कर दिया है और ये अपने सभी उत्तरदायित्वों को जैसे की स्वच्छता, सफाई, कूड़ा उसका निपटारन, प्राथमिक स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा, सड़क–नालों की सफाई, आवारा पशुओं पर नियंत्रण, पार्कों की देखरेख आदि सभी में विफल रहा है। इस सदन में यह भी गौर किया जाता है कि हाल ही में नगर निगमों में एक बड़ा घोटाला उजागर हुआ है और यह सदन इससे अत्यधिक चिंतित है, यह शर्म का विषय है कि पूरी दिल्ली, नगर निगमों में करीब 2500 करोड़ के घोटाले की चर्चा हो रही है। यह सदन इस घोटाले की कड़ी निंदा करता है और सिफारिश करता है कि केंद्रीय जांच ब्यूरो, सीबीआई द्वारा इस घोटाले की जांच की जाए और दोषी पाए जाने वाले व्यक्तियों को अनुकरणीय सजा दी जाए, धन्यवाद जी।

माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है,

जो इसके पक्ष में हैं, वो हाँ कहें,

जो इसके विरोध में है, वे ना कहें,

(ध्वनिमत हाँ पक्ष में होने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता, प्रस्ताव पारित हुआ।

अब अन्य सदस्य भी चर्चा में भाग ले सकते हैं। रोहित महरोलिया जी।

श्री रोहित कुमारः धन्यवाद, माननीय अध्यक्ष महोदय जी। लोकतंत्र के इस ऐतिहासिक मंदिर में पहली मर्तबा मुझे ये जो बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। और भारतीय जनता पार्टी शासित तीनों एमसीडी के अंदर जो भ्रष्टाचार की फेहरिस्त दिन पर दिन लम्बी होती जा रही है। आज हमारे वरिष्ठ साथी भाई सौरभ भारद्वाज जी ने जो नॉर्थ एमसीडी के अंदर 2500 करोड़ रुपए का जो घोटाला सामने आया है, उसके ऊपर जो चर्चा आज सदन के पटल पर रखी है।

माननीय अध्यक्ष , जी पिछले 15 सालों से तीनों एमसीडी के अंदर भारतीय जनता पार्टी का राज है और पिछले 15 सालों के अंदर इन भाजपा वालों ने तीनों एमसीडी को भ्रष्टाचार का बहुत बड़ा अड्डा बना दिया है, न केवल अड्डा बना दिया बल्कि इनके एक बहुत बड़ी जो इनकी उपलब्धि है, वो ये कि विश्व के सबसे भ्रष्ट विभागों की सूची के अंदर एमसीडी को उन्होंने पहले पायदान पे लाकर खड़ा कर दिया है। अध्यक्ष जी, अभी जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय जनता पार्टी के तीनों मेयर अपने साथियों के साथ में मुख्य मंत्री आवास पर एक नौटंकी कर रहे हैं, 13 हजार करोड़ रुपए की मांग को लेते हुए वो धरने की नौटंकी जारी है। लेकिन ये कोई पहला मामला नहीं है एमसीडी के अंदर नेता विपक्ष रहते हुए बड़ी नजदीक से मैंने देखा है कि ऐसा कोई डिपार्टमेंट एमसीडी का नहीं है कि जिसके अंदर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार नहीं होता है। आए दिन हमारे साथी आम आदमी पार्टी के निगम पार्षद भी आवाज उठाते रहे हैं, ऐसा कोई डिपार्टमेंट नहीं है जैसे भाई सौरभ भाई जी ने बताया उदाहरण देके के कि किस तरह से बिल्डिंग डिपार्टमेंट से चाहे वो छोटी

कालोनी हो, कच्ची कालोनी हो, चाहे वो बड़ी पॉश कालोनी हो, हर जगह इनका जो तंत्र भ्रष्टाचार का दिन प्रतिदिन बहुत मजबूत होता जा रहा है। माननीय अध्यक्ष जी ये भ्रष्टाचार की वजह से ही कभी सफाई कर्मचारी अपनी सैलरी की मांग को लेकर हड़ताल करते है, तो कभी डॉक्टर, नर्स करते हैं एमसीडी के, कभी स्कूल के टीचर्स, कभी माली, कभी डीवीसी कर्मचारी क्योंकि उनको समय पर सैलरी नहीं मिलती है। सैलरी इसलिए नहीं मिलती क्योंकि भ्रष्टाचार इतना बड़ा है जो इनके पास में अपने रिसोर्सिज हैं, जिनके माध्यम से इनको राजस्व की प्राप्ति होती है, उसके अंदर भी बहुत बड़ा घोटाला है। साथ ही साथ ये आरोप करते रहते हैं कि दिल्ली सरकार केजरीवाल जी एमसीडी को पैसा नहीं दे रही है। कर्मचारियों को गुमराह करने का प्रयास करते हैं कि जी, आपकी सैलरी इसलिए नहीं मिल रही जी, केजरीवाल जी पैसा नहीं दे रहे हैं। जबकि नियमानुसार दिल्ली सरकार लगातार पूर्व की सरकारों से ज्यादा पैसा इन तीनों एमसीडी को देती आ रही है। उसके बावजूद भी कर्मचारियों को; चाहे सफाई कर्मचारी हो, चाहे माली हो, चाहे नर्सेसिज हो, चाहे डॉक्टर हो, चाहे वो टीचर्स हो उनको समय पर सैलरी नहीं मिलती है।

मैं कुछ सरकारी आंकड़े आपके सामने प्रस्तूत करना चाहूंगा कि जिस समय दिल्ली के अंदर कांग्रेस का राज था वर्ष 2013—14 में, उस समय जो पूर्वी दिल्ली नगर निगम का आंकड़ा मैं आपको बता दूं, 287 करोड़ रुपए दिया गया मात्र और जिस समय 2015 में एलजी साहब का शासन था यानी कि भारतीय जनता पार्टी का ही राज था, उस समय मात्र 396 करोड़ रुपए दिए गए और जब 2015 के अंदर अरविंद केजरीवाल जी की सरकार बनी तो माननीय अध्यक्ष जी, उस वक्त जहां 287 करोड़ कांग्रेस के समय दिया जा रहा था, 396 करोड़ बीजेपी के समय, 702 करोड़ रुपए पूर्वी दिल्ली एमसीडी को दिए गए। उसके बाद अगले साल 948 करोड़, फिर अगले साल 17—18 में 723 करोड़, 590 करोड़ अगले वर्ष में। यानि कि पूर्व की जो सरकार हैं उनसे तीन गुणा, चार गुणा बढ़कर आम आदमी पार्टी की सरकार ने इन तीनों एमसीडी को पैसा दिया है अगर तीनों एमसीडी की बात करें तो कहीं ये राशि पूर्व की सरकारों से बढ़कर अरविंद केजरीवाल जी की सरकार देती आ रही है। उसके बावजूद भी कर्मचारियों को समय पर सैलरी नहीं मिल रही है। इस बीच देखने

वाली बात ये है माननीय अध्यक्ष जी, कि न तो नई भर्तियाँ हुई हैं सफाई कर्मचारियों की अन्य डिपार्टमेंट की, ना ही उनकी सैलरी बढ़ाई गई है। जिस वक्त कॉग्रेस के समय में या बीजेपी के समय में 200 करोड़, ढ़ाई सौ करोड़ रुपए मिला करता था, न तो कोई हड़ताल होती थी, न 13 हजार करोड़ की मांग होती थी और सब कुछ बढ़िया चलता था। जब आम आदमी पार्टी की सरकार सत्ता में आयी और उनसे पूर्व की सरकारों से तीन गुणा, चार गुणा बढ़कर पैसा मुहैया करा रही है, तो हड़तालें भी हो रही हैं, धरने भी हो रहे हैं। सारी चीजों का आप देख सकते हैं, किस तरह फर्जीवाड़ा सामने आ रहा है। और यही नहीं, माननीय अध्यक्ष जी, दिल्ली सरकार ने तीनों एमसीडियों को कर्जा भी दे रखा है और वर्ष 2015—16 के अंदर जब आम आदमी पार्टी की सरकार बनी तो 237 करोड़ रुपए का कर्जा पूर्वी दिल्ली नगर निगम को दिया गया। 2016—17 में 331 करोड़ दिया गया। अब तक हजारों करोड़ रुपया तो केवल कर्जे के तौर पर एमसीडी को दिया गया है और इनकी वित्तीय हालत को देखते हुए, क्योंकि वित्तीय हालत इनके काले कारनामों की वजह से है। फिर भी बड़ा दिल दिखाते हुए माननीय अरविंद केजरीवाल जी ने इनका जो ब्याज बनता था, जो करोड़ों रुपए के अंदर ब्याज बनता है, वो भी माफ कर दिया। उसके बावजूद भी इनका रोना खत्म नहीं हुआ। माननीय अध्यक्ष जी आज भारतीय जनता पार्टी के मेयर और उनके साथी पार्षद मुख्य मंत्री आवास पर बैठे हैं, एक नौटंकी कर रहे हैं, तो मैं बताना चाहूंगा कि इतना बड़ा जो भ्रष्टाचार सामने आया है, उसको दबाने का प्रयास किया जा रहा है और सबसे बड़ी बात कि आज जो देश का बहुत बड़ा मुद्दा है या कहें सबसे बड़ा मुद्दा है, किसानों का मुद्दा, उस मुद्दे से जनता का ध्यान डायवर्ट करने के लिए ये वहाँ पर बैठे हैं लेकिन उनको ये नहीं पता कि अपने आकाओं के कहने से मोदी जी और अमित शाह जी के दिशा निर्देशानुसार ये जिस धरने पर बैठे हैं और जिस मुद्दे को लेकर डायवर्ट करना चाहते हैं, उस मुद्दे पर तो पहले से ही सैकड़ों सवालिया निशान इनके ऊपर लगे हुए हैं। पहले से ही इनके काले कारनामे आये दिन सामने आते जा रहे हैं और माननीय अध्यक्ष जी...

माननीय अध्यक्षः मेहरोलिया जी, कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री रोहित कुमारः मैं कन्क्लूड करता हूँ, दो—चार प्वाइंट कर दूँ। माननीय अध्यक्ष

जी, पहली बार मौका मिला है तो मैं कुछ समाज की पीड़ा भी रखना चाहूंगा आपके समक्ष कि जब–जब एमसीडी के अंदर भ्रष्टाचार होता है और जब–जब जनता के खून पसीने की गाढ़ी कमाई के ऊपर डाका डाला जाता है तो उसका सबसे ज्यादा असर पड़ता है, तो सबसे ज्यादा उस सफाई कर्मचारी के ऊपर पड़ता है। उसको तीन–तीन, चार–चार महीने सैलरी नही मिलती। आपको बताना चाहूंगा अध्यक्ष जी, कि वो हमारे तीनों मेयर, उनके साथी जिस वक्त सुबह–सुबह सर्दी के इन दिनों में रजाइयों से सोकर भी नहीं उठते हैं, तो हमारे सफाई कर्मचारी भाई–बहन, वो स्वच्छता के सैनिक सुबह–सुबह घने कोहरे के अंदर वो झाडू लेकर सड़कों के ऊपर पहुंच जाते हैं, सुबह 6–6 बजे, पांच–पांच बजे इतनी मेहनत करते हैं, करोना काल के अंदर हमारे कर्मचारी, सफाई कर्मचारी भाई–बहन अपनी जान हथेली के ऊपर लेकर सड़कों की सफाई करते हैं, गलियों की सफाई करते हैं, संक्रमण से हमारे को बचाते हैं, हमारे को नया जीवन देते है। उन योद्धाओं को जब तीन–तीन, चार–चार महीने सैलरी नहीं मिलती तो सोचो कि उनके ऊपर क्या बीतती होगी। माननीय अध्यक्ष जी, आज ये तीन जो इनके भारतीय जनता पार्टी के मेयर बैठे हैं, इनको लगातार पुलिस का भी पूरा, खाना–पीना भी मुहैया करा रही है दिल्ली पुलिस, सारे काम कर रही है। अभी भाजपा के कार्यलय के ऊपर एक वीडियो सामने आया था कि वहाँ चर्चा की जा रही थी लगातार सफाई कर्मचारियों को इस्तेमाल करने के लिए, अपने राजनैतिक मनसूबों को पूरा करने के लिए, भारतीय जनता पार्टी के लोग दबाव बना रहे, सफाई कर्मचारी यूनियनस पे कि आपको सैलरी तभी दी जाएगी जब अरविंद केजरीवाल जी का पुतला फूकने के लिए हमारे साथ में आओगे। जब आप हमारे धरने में साथ में आकर बैठोगे। अभी उनका एक बहुत बड़ा वीडियो वायरल हुआ कि जिसके अंदर भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय के ऊपर सफाई कर्मचारी यूनियन के एक नेता ने उनके ऊपर जोरदार तमाचा मारते हुए बोला कि आप हमसे समर्थन मांग रहे है, आप भूल गए कि जब आप वही भारतीय जनता पार्टी के लोग हैं। जो हमारे उपर लाठियां चलवाते हैं, हमारा शोषण करते हैं, हमारे को गुलामी कराने पर मजबूर करते हैं और आज हमसे समर्थन मांग रहे हैं। इनका चेहरा बेनकाब होता है।

माननीय अध्यक्ष जी, क्योंकि हम अपने समाज का नेतृत्व करते हैं, नुमाइंदगी करते

हैं तो इनका एक बार देखिए कि इनकी दोहरी मानसिकता, इनकी दलित विरोधी मानसिकता साफ तौर से जो सफाई कर्मचारी वाल्मीकि समाज से आते हैं, हम अपने समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं तो हमारे को निशाना बनाया जाता है। 28 अक्तूबर को जब सफाई कर्मचारियों का समर्थन करने के लिए आम आदमी पार्टी के विधायक वहाँ पर पहुंचे तो इन्होंने खास तौर से वाल्मीकि समाज के विधायकों को निशाना बनाते हुए वहाँ पर पुलिस द्वारा डंडे बरसाए गए, हमारे को घसेड़ा गया, हमारे को अपमानित करते हुए जातिसूचक शब्द पुलिस द्वारा वहाँ बोले गए जो अपने आप में बहुत शर्मनाक बात है।

माननीय अध्यक्षः मेहरोलिया जी, अच्छा बोले हैं आप, अब कन्क्लूड करिए।

श्री रोहित कुमारः माननीय अध्यक्ष जी, यही नहीं हमारे ऊपर... भाई कुलदीप जी बैठे हैं, हमारे उपर एफआईआर की गयी, हमारे उपर मुकदमे दर्ज किए गये तो मैं भारतीय जनता पार्टी वाले इन भाजपाइयों को बताना चाहता हूँ कि चाहे आप हमें गोली मार दीजिए, जेल में ठूंस दीजिए, चाहे आप हमारे साथ कुछ भी कर लीजिए लेकिन अपने समाज की आवाज को उठाना बंद नहीं करेंगे।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद।

श्री रोहित कुमारः माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपको कम शब्दों में...

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद, अब नहीं मेहरोलिया जी, प्लीज।

श्री रोहित कुमारः मैं अपने आपको कम शब्दों में यहीं पे कन्क्लूड करना चाहूंगा। एक शेर मैं इस बीच आप लोगों के बीच में रखना चाहूंगा किः

जब भी हक का सवाल होता है, जाने क्यूं बवाल होता है।

जब भी कटे परों से परिंदे उड़ान भरते हैं, आसमां को क्यूं मलाल होता है।

तो अध्यक्ष जी, दो लाइन बोल के दो मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूँ। जैसा कि भाई सौरभ जी ने बता ही दिया कि जिस समय भ्रष्टाचार अभी एक बहुत बड़ा सामने आया, उस पर मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। ये जो भाजपा के एक पार्षद रंगे हाथों

पकड़े गए थे मनोज मेहलावत सीबीआई द्वारा, ये कोई पहला मामला नहीं है। उससे पहले न्यू अशोक नगर वार्ड में, जहाँ से मैं आता हूँ त्रिलोक पुरी से, वहाँ वार्ड नंबर 4/ई से भाजपा के पार्षद के पति का एक वीडियो... एक आडियो माफी चाहूंगा सामने आया जिसको प्रेस रिलीज में हमने कहा और वहाँ दर्शाया भी कि उसके अंदर वो पार्षद का पति एक बिल्डर से।

माननीय अध्यक्षः मेहरोलिया जी, अब...

श्री रोहित कुमारः पैसों की उगाही करते हुए पाया गया।

माननीय अध्यक्षः मेहरोलिया जी, अब कन्क्लूड हो गया, प्लीज बैठिए अब।

श्री रोहित कुमारः ठीक है, अध्यक्ष जी, आखिर में एक शब्द।

माननीय अध्यक्षः नहीं, अब बैठिए प्लीज।

श्री रोहित कुमारः अपनी स्वयं की लिखी पंक्तियां दो बोल के बात खत्म करता हूँ उसी में सारी चीजें आ जाएंगी। आखिर में दो शब्द बोलने की मैं इजाजत चाहूंगा।

माननीय अध्यक्षः यही दो शेर जो शेर आपने लिखे हैं, वो बोलिए।

श्री रोहित कुमारः जी हां, कि इनके जो बड़े बड़े वादे होते हैं सत्ता में आते हैं गरीबों को सफाई कर्मचारियों को बहला फुसला कर ये जो बड़े–बड़े वादे कह के आते हैं, उसके लिए कुछ पंक्तियां लिखी थी मैंने कि कि तेरे वादों पे एतबार करूं तो कैसे करूं, आज हमारे माननीय लीडर आफ अपोजिशन भी बैठे हैं बिधूड़ी साहब।

कि तेरे वादों पे एतबार करूं तो कैसे करूं,

तेरे हर वादों को जुमलों में बदलते देखा है।

चाल, चरित्र, चेहरे की बात करने वालों को,

रोज नए सांचों में ढलते देखा है।

नहीं मंजूर अब नफरत की ये सियासत हमें,

इस मंदिर मस्जिद के झगड़े में इस देश को जलते देखा है,

बहुत बहुत शुक्रिया, बहुत बहुत धन्यवाद, बहुत बहुत शुक्रिया अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः बहुत बहुत धन्यवाद। श्री दिलीप पाण्डेय जी।

श्री दिलीप पाण्डेय (माननीय मुख्य सचेतक): बहुत बहुत धन्यवाद माननीय अध्यक्ष जी, आज इस चर्चा में अपनी बात रखने का अवसर मुझे मिला। बहुत गंभीर और दिल्ली के हक के विषय पर आज चर्चा हो रही है, सार्थक चर्चा हो रही है और जब भी हम एक बेहतर दिल्ली का सपना देखते हैं तो उस बेहतर दिल्ली में सुंदर दिल्ली हम नहीं कह पाते। हम ये नहीं कह पाते कि ये दिल्ली बेहतर हो रही है तो सुंदर भी हो रही है साथ में, कारण उसका क्या है, एमसीडी? कल की किसान हित पर जो चर्चा रही उसमें भी ये बात निकल के आई कि तीन मेयर धरने पे बैठे हैं और उनका भी ख्याल रखना चाहिए हालांकि ये क्लेरिफाई भी किया गया कि वो तीन मेयर इसलिए धरने पे बैठे हैं कि उन्हें, ढ़ाई हजार करोड़ खा लिए हैं और खाने को चाहिए जैसाकि सौरभ भाई ने बताया कि अब मर्सिडीज मांग रहे हैं ताकि स्कॉर्पियो पे काम सेट हो जाए। इस तरह की मंशा है उनकी। अध्यक्ष जी, बड़ा अजीब सा वाकया हुआ, ये ढ़ाई हजार करोड़ रुपये का। 13 हजार करोड़ रुपये का आँकड़ा कहाँ से आया, वो इनमें से किसी को नहीं पता। तो ढ़ाई हजार करोड़ रुपये कहाँ से आये, ये सबको पता होना चाहिए। पता है, यहाँ पे आम आदमी पार्टी के सभी विधायकों को पता है, दिल्ली की जनता को पता है कि कैसे एक संस्था ने अपने ही एक हिस्से के उपर जो कर्ज था, जो देनदारी थी, जो किसी भारतीय जनता पार्टी के नेता के ताऊ के रिश्तेदार के पैसे नहीं थे, दिल्ली की जनता के पैसे थे, उस देनदारी को ऐसे ही मतलब ये बड़े लंबे समय से बड़ा अच्छा चलन चल रहा है, कभी उधर वाली एमसीडी इधर वाले के माफ कर देती है, कभी इधर वाली उधर वाले के माफ कर देती है। वो जो कहते हैं न कि you scratch my back, I scratch yours. वो उस अंडरस्टेंडिंग के साथ जो है भ्रष्टाचार बहुत सलीके से फल–फूल रहा है और ये भ्रष्टाचार में भी भारतीय जनता पार्टी एक अलग किस्म के इमोशनल भाई–चारे का संदेश देती दिख रही है। भाइयों की तरह खड़े हैं एक दूसरे के साथ जब भ्रष्टाचार करने की, करप्ट प्रेक्टिसेस की बात

आती है तो... और तब मुझे लगता है कि नहीं, सही तो है, भारतीय जनता पार्टी दक्षिण पंथ मशहूर है। अपनी देनदारियों को अस्वीकार करने से, हर चीज को शून्य कर देने से, ढ़ाई हजार करोड़ रुपये की देनदारी साउथ एमसीडी के खाते की, जैसे ही मौका मिला, शून्य हो गयी और फिर ये विश्वास हो जाता है, जब हम भारतीय जनता पार्टी का घोषणा–पत्र देखते हैं विश्वास हो जाता है कि शून्य की खोज भाजपा वालों ने की होगी निश्चित रूप से। 15 लाख जीरो, स्कूल जीरो, अस्पताल जीरो, ढ़ाई हजार करोड़ रुपये की देनदारी जीरो, सब जीरो, सब शून्य कर दिया इन लोगों ने। और इसके बाद भी अगर पेट नहीं भरा तो 11 नए नए टैक्सेस जो हैं, दिल्ली की जनता के ऊपर भारतीय जनता पार्टी शासित एमसीडी ने लाद दिये। ये ये तो बता नहीं पा रहे कि पहले के टैक्सिस वसूले जा रहे हैं तमाम तरह के उन टैक्सिस का वसूला हुआ पैसा कहां जा रहा है, वो वसूली ठीक से हो रही है कि नहीं हो रही है, इसपे कोई बात नहीं कही जा रही है। और पैसा खाना है तो भाजपा के तीन मेयर, एक सीएम साहब के यहाँ भंडारेनुमा एक धरना चल रहा है जहाँ फाइव स्टार से खाना आ रहा है, पुलिस फेसिलिटेट कर रही है, आराम से बैठे हुए हैं, अपनी जिम्मेदारियों से कोई वास्ता–राब्ता नहीं है, कमिश्नर साहब नहीं हैं, मेयर साहब नहीं हैं, एमसीडी जाए भाड़ में, जनता जाए भाड़ में, भंडारा कर रहे हैं सीएम साहब के गेट पे बैठ के। और उसमें भी घड़ियाली आँसू बहाए जा रहे हैं। हकीकत ये है कि एमसीडी पैसा मांगती है... मेरा बच्चा अगर मुझसे पैसा मांगेगा और मुझे लगता है कि जरूरत है देना पड़ेगा तो पहले तो हिसाब मांगूंगा मैं कि कल जो दो रुपये दिए थे, वो कहाँ गए। भारतीय जनता पार्टी को पैसा चाहिए लेकिन ऑडिट नहीं कराएंगे। और अध्यक्ष महोदय, एक बार नहीं, लगभग हर बार इनका जो ये जो सीएजी है अपनी, सीएजी आम आदमी पार्टी की नहीं है, दिल्ली सरकार के अधीन नहीं आती, इनकी सीएजी जो आडिट करती है हर साल एमसीडी के अंदर घोटाले और भ्रष्टाचार के उपर बहुत सलीके से अपनी फाइंडिंग रिपोर्ट में लिखती है। ये कैमिकल खरीदते हैं तो घोटाला करते हैं, डेंगू के उपर काम करते हैं तो घोटाला करते हैं, कोई भी स्कीम ले के आते हैं, बिना घोटाले के वो स्कीम पूरी नहीं होती है, ये सीएजी कहती है। अध्यक्ष महोदय, ये जो ढ़ाई हजार करोड़ रुपये हैं, ये समझना पड़ेगा, किसका पैसा है। ये भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का पैसा नहीं है। ये दिल्ली के एमसीडी के सरकारी स्कूलों में पढ़ा

रहे अध्यापकों का पैसा है, ये हिन्दूराव अस्पताल और एमसीडी के जितने अस्पताल हैं उनके वो धरना करने वाले डाक्टरों का पैसा है जो फ्रंट लाइन में खड़े थे कोरोना काल में। ये पैसा उन सफाई कर्मचारियों का है जिनके पीठ और पेट पे भारतीय जनता पार्टी का निगम लात मार रहा है, ये उनका पैसा है जिनको भारतीय जनता पार्टी के नेता आपसी सूझ–बूझ और भाई चारे के साथ खत्म कर रहे हैं, लील रहे हैं भ्रष्टाचार का ग्रास बना रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, कभी कभी लगता है कि तर्क से भारतीय जनता पार्टी का कोई वास्ता ही नहीं है। पहले अध्यापक का पैसा खा लिया। क्यों खा लिया भाई? अरे व्हाट्स एप्प, युनिवर्सिटी पे सारी पढ़ाई चल ही रही है तो अध्यापकों की आवश्यकता ही नहीं है, सब कुछ अच्छा चल रहा है। डाक्टर का पैसा खा लिया, क्यों खा लिया भाई? अरे! थाली बजवा दिया, सब ठीक हो गया। क्या जरूरत है? तो ये जो दर्शन है भारतीय जनता पार्टी का, ये दर्शन जो है दिल्ली को बेहतर और सुंदर दिल्ली बनाने से रोक रहा है और मजे की बात ये, दिलचस्प बात ये कि घर में नहीं दाने और भाजपा चली भुनाने। अपने पास पैसा नहीं है। कोरोना रोने वाली एमसीडी ढ़ाई हजार करोड़ रुपये बगैर किसी संवैधानिक तरीके के, रास्ते के माफ कर देती है कि भई, कर दिया बस हमने। तो अध्यक्ष महोदय, इसीलिए कहा जा रहा है ये जो ढ़ाई हजार करोड़ रुपये माफ किए गए हैं, दरअसल टेक्नीकली, लीगली स्पीकिंग ये घोटाला है, ये स्कैम है, ये दिल्ली की जनता का पैसा जो दिल्ली की सेवा करने वाले टीचर्स को मिलना चाहिए, डॉक्टर्स को मिलना चाहिए था, सफाई कर्मचारियों को मिलना चाहिए था, वो पैसा इन्होंने माफ कर दिया, खा लिया, खत्म कर दिया। भ्रष्टाचार हो गया उसके ऊपर।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम जानते हैं, एमसीडी का एक पर्याय बन चुका है मोस्ट करप्ट डिपार्टमेंट। आप आँख फैला के देख लीजिए, लगभग 77 करोड़ रुपये से शुरू हुआ फ्लाई ओवर जब एक दशक से भी ज्यादा समय में बन के तैयार हुआ तो बजट उसका हजार करोड़ रुपये था। भ्रष्टाचार हर जगह है। ये अस्पतालों के अंदर इक्विपमेंट खरीदते हैं तो भ्रष्टाचार होता है, कोई बिल्डिंग बनाते हैं तो भ्रष्टाचार होता है और यहाँ तो... मेरा एक दोस्त है अध्यक्ष महोदय, उसने कहा कि मैं बहुत दिन से पार्षद ढूंढ रहा था भाजपा का, मिला नहीं। अपने घर के सामने एक बोरी ये जो

बदरपुर है, वो डाला, थोड़ी सी सीमेंट डाली और कुछ ईंट गिरा दिया। अपने आप उनका एक बंदा सूंघते सूंघते चला आया। मैंने कहा भई, ये तो ऐसे ही गिराया था, मेरे को काम है तेरे से। ये सब जानते हैं। आपको पार्षद नहीं मिल रहा, पार्षद का कोई काम हो आप घर के आगे सीमेंट, बालू रख दीजिए, अपने आप वो सूंघते सूंघते चले आएंगे। आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। लोग इनको लेंटर बाबू कह कर बुलाते हैं इनके पार्षदों को इनके इलाकों में।. हर लेंटर पे पैसा खाते हैं। तो इनको पैसा इसलिए चाहिए कि भूख बढ़ गयी है। आय इनको अपनी बढ़ानी है जो भ्रष्ट सोर्सेस से जो इनकी आय होती है, वो इनको बढ़ानी है इसलिए इनको पैसा चाहिए।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज की चर्चा में अपनी बात को शामिल करते हुए ये कहना चाहता हूँ कि निश्चित रूप से ढ़ाई हजार करोड़ रुपये के घोटाले की जाँच होनी चाहिए, सीबीआई से जाँच होनी चाहिए ताकि दूध का दूध, पानी का पानी हो सके, दिल्ली की जनता के सामने जो इनका नारा था, 'नए चेहरे, नई उड़ान, नई उर्जा' का और नए चेहरों के नाम पे जो इन्होंने नए कलेक्शन एजेंट बिठा दिए दिल्ली के अंदर, उनका चेहरा बेनकाब होना चाहिए। बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री जय भगवान उपकार जी।

श्री जय भगवानः माननीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं आपका ध्यान भारतीय जनता पार्टी शासित उत्तरी दिल्ली नगर निगम, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम और पूर्वी दिल्ली नगर निगम की तरफ ले जाना चाहता हूँ, जहाँ भ्रष्टाचार के नए नए कीर्तिमान तोड़े जा रहे हैं। जब दिल्ली नगर निगम का विभाजन किया गया, तब उसका कर्जा 707 करोड़ था परन्तु पिछले 15 वर्षों से उत्तरी दिल्ली नगर निगम में सता में काबिज भारतीय जनता पार्टी ने इस कर्ज को कम करने की बजाय इसको बढ़ा कर लगभग 4800 करोड़ तक पहुंचा दिया। ये दर्शाता है कि निगम की सत्ता भाजपा शासित निगम के लोगों से नहीं चल पा रही है। मैं आपको बताना चाहता हूँ आदरणीय महोदय, निगम में तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण पद हैं, मेयर, स्थाई समिति और नेता सदन। निगम के सभी नीतिगत निर्णय इन तीनों के ही सामूहिक विवेक, अनुभव और निर्णय क्षमता पर निर्भर होते हैं। किन्तु अत्यन्त खेद का विषय है। मैं आपको बताना चाह रहा हूँ,

इन तीनों पदों परआसीन महानुभावों में राजनीतिक परिपक्वता एवं निर्णय क्षमता का अभाव है। जिसके परिणामस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण मद्दे स्थानीय समिति में सदन के समक्ष महीनों तक अटके रहते हैं। उन मुद्दों पर कोई निर्णय नहीं लिया जाता। सत्ताधारी दल की नेतृत्व अक्षमता के कारण परेशान निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी हो गया है तथा सदन की गरिमा का ह्रास हो गया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको 2017 चुनाव के पहले की घटना याद दिलाना चाहता हूँ जब निगम के शिक्षक, डॉक्टर, और सफाई कर्मचारी आदि को अपना वेतन लेने के लिए माननीय न्यायालय की शरण में जाना पड़ा था। भारतीय जनता पार्टी हाई कमान ने निगम की वित्तीय दुर्दशा के लिए भाजपा पार्षदों को जिम्मेदार मानते हुए ये कठोर निर्णय लिया कि किसी भी सीटिंग पार्षद को टिकट नहीं दिया जाएगा। निगम की वित्तिय स्थिति से सुधार किया जाएगा। केन्द्र से सीधा फंड लाया जाएगा लेकिन निगम के तीन वर्ष बीत जाने के बावजूद स्थिति पहले से भी बदतर है। सत्ताधारी दल भाजपा के नेता अपनी कमियों और कमजोरियों के लिए आत्म मंथन करने की बजाय दिल्ली की सरकार को कोसने में लगे हैं। अध्यक्ष महोदय, ये कथन बहुत ही हास्यपद लगता है वो कहते हैं कि परिस्थितियाँ कभी भी हमारे लिए समस्याएं नहीं बनती, समस्या तो तब बनती है जब हमें परिस्थितियों से निपटना नहीं आता। अध्यक्ष महोदय, इसका जीता जागता उदाहरण दिल्ली सरकार है। केन्द्र सरकार की पाबन्दियों के बावजूद, एलजी साहब के हस्तक्षेप के बाद भी दिल्ली सरकार ने अपने बजट को दिल्ली का सर्वश्रेष्ठ बजट बनाया। जबकि आज निगम की स्थिति ये है कि निगम के सफाई कर्मचारियों को समय से वेतन नहीं मिल रहा। पेशनरों को पेंशन नहीं मिलती। ठेकेदारों का साढ़े चार सौ करोड़ रूपया निगम की तरफ बकाया है। कर्मचारियों के पेंशन फंड और जीपीएफ से 190 करोड़ रुपये वेतन पर खर्च कर दिये जाते हैं। चार–चार वर्ष से सेवा निवृत्त जो लोग निगम से सेवा निवृत्त हो गए हैं, उन सभी लोगों को चार–चार वर्षो से पेन्शन, ग्रेच्युअटी लीव, इन्केशमेंट और उनके जीपीएफ की राशि नहीं दी जाती। अध्यक्ष महोदय, ऐसे–ऐसे लोग हैं जिनकी बेटियों की शादी होती है और वो रिटायरमेंट हो गए हैं और वो बार–बार निगम के चक्कर लगा रहे हैं। बार–बार निगम के अधिकारियों के पास जा रहे हैं लेकिन निगम के

अधिकारियों के कानों पर जूं नहीं रेंगती और वो बेचारा परेशान हो जाता है। कई ऐसे भी केस हुए हैं एक दो, निगम के अंदर जहाँ लोगों ने आत्महत्या कर ली। क्योंकि उनकी बेटी की शादी है और उन्हें समय से पैसा नहीं मिल पाया। मैं आपको बताना चाहता हूँ निगम के अंदर क्योंकि निगम की स्थापना 1958 में इसलिए की गयी कि जो आम जनता है, उसकी जो बेसिक सुविधाएं हैं। जो लोग सुबह से लेकर शाम तक छोटी–छोटी चीजें यूज करते हैं; पार्क, टायलेट, डिस्पेंसरी, कम्युनिटी सेंटर ये छोटी–छोटी चीजें ये सभी चीजें लोगों की जरूरत होती हैं। लेकिन जो दिल्ली में सत्ता में काबिज हमारी भारतीय जनता पार्टी...

माननीय अध्यक्ष: जय भगवान जी, जरा शॉर्ट करिए प्लीज।

श्री जय भगवान: नहीं, शॉर्ट ही कर रहा हूँ सर। यहाँ पर घोटाले पर घोटाले करते जा रहे हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ अध्यक्ष महोदय, कि यहाँ पर जो इनकी पार्किंग का मामला है। पार्किंग आप दिल्ली के अंदर जितनी भी पार्किंग हैं, आप जाकर अगर चैक कराएंगे तो वहाँ पर महा घोटाला हो रहा है। वहाँ पर पार्किंग माफिया बैठा हुआ है। पार्किंग माफिया कब्जा करके बैठा हुआ है लेकिन इनके कानों पर जूं नहीं रेंग रही है। मैं आपको बताना चाहता हूँ, दिल्ली के अंदर कितने अनऑथोराइज्ड बाजार चल रहे हैं। उन अनऑथोराइज्ड बाजारों के लिए मैंने क्योंकि मैं स्टेंडिंग कमेटी के अंदर मैम्बर रहा अध्यक्ष महोदय। स्टेंडिंग कमेटी के अंदर भी मैने बोला, सदन के अंदर मेयर साहब को भी बोला कि जितने भी अनऑथोराइज्ड बाजार चल रहे हैं इन पर अंकुश लगाया जाए जिससे कि निगम के अंदर हमें रेवेन्यू प्राप्त होगा। लेकिन यहाँ पर किसी के कान पर जूं नहीं रेंगी। अध्यक्ष महोदय, मेरे खुद वार्ड के अंदर; वार्ड नम्बर 32 से मैं काउंसलर हुआ करता था। मैं आपको बताना चाहता हूँ, वहाँ से मेरे यहाँ पर दो बाजार ऑथोराइज्ड थे, सोलह बाजार अनऑथोराइज्ड थे। मैंने पूरी दिल्ली के लिए बोला।

माननीय अध्यक्ष: कन्क्लूड करिए।

श्री जय भगवान: अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ एडवर्टाइजमेंट... एडवर्टाइजमेंट में बहुत बड़ा घोटाला इनके यहाँ पर है।

माननीय अध्यक्षः जय भगवान जी, कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री जय भगवानः कंट्रोल ही कर रहा हूँ सर। एडवर्टाइजमेंट में बहुत बड़ा घोटाला यहाँ पर है। यूनिपोल में घोटला है अध्यक्ष महोदय और अवैध बाजार का तो है ही है और हाउस टैक्स। हाउस टैक्स अगर आप लोग भरने जाते हो तो इनके पास कोई रिकॉर्ड ही नहीं मिलेगा आपको। किसी भी जोन के अंदर चले जाइए आप। इनके पास रिकॉर्ड नहीं है हाउस टैक्स का। मैं आपको बताना चाहता हूँ क्योंकि जब लोग अपना पिछला रिकॉर्ड मांगने की कोशिश करते हैं तो उनको रिकॉर्ड नहीं मिल पाता। अध्यक्ष महोदय, इनका लाइसेंसिंग डिपार्टमेंट...

माननीय अध्यक्षः भई अब कन्क्लूड करिए।

श्री जय भगवानः नहीं, कन्क्लूड ही कर रहा हूँ। बहुत छोटे–छोटे शब्दों में

बोल रहा हूँ मैं आपसे।

माननीय अध्यक्षः नहीं, अब कन्क्लूड करिए, एकदम कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री जय भगवानः चलिए अध्यक्ष महोदय, मैं बस इतना कहना चाह रहा हूँ कि 2014 में देश के अंदर भारतीय जनता पार्टी की जब सरकार बनी तो नरेन्द्र मोदी जी 2014 के अंदर स्वच्छ भारत मिशन को ले करके आये। क्योंकि निगम का पहला कार्य सफाई, सफाई व्यवस्था और जब देश के प्रधान मंत्री ने दिल्ली के अंदर झाड़ू चलायी और कहा कि हम भारत को स्वच्छ बनाएंगे तो दिल्ली की तीनों नगर निगमों ने अपने प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी का जो सर है, वो शर्मसार कर दिया। आप जाकर देखेंगे दिल्ली की जो दुर्दशा है सफाई के मामले में, गली–गली कूचों–कूचों में पानी भरा हुआ है, बुरा हाल है। जितनी भी स्लम बस्तियाँ है, आप उनके अंदर जाकर देखेंगे तो आपको गंदगी के ढेर अम्बार नजर आएंगे। नरेला के अंदर मैने बीच में जब मैं स्टेंडिंग कमेटी के अंदर था तो मैंने बोला कि वहाँ पर एक–एक महीने तक कूड़ा नहीं उठाया। अध्यक्ष महोदय, जिस वार्ड से मैं काउंसलर था, वहाँ पर 120 कर्मचारी थे। एक सौ बीस कर्मचारियों के लिए अध्यक्ष महोदय, यह बहुत सुनने का विषय है। वहाँ पर 60 कर्मचारी मेरे वार्ड के अंदर आते थे। मैं बार–बार वहाँ लिखकर दे रहा

हूँ। उनकी मिनट्स लिखकर मैने सदन में दी। स्टेंडिंग कमेटी में दी लेकिन उनके ऊपर भी कोई कार्रवाई नहीं की गयी। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इतना बड़ा घोटाला वहाँ पर निगम के अंदर चल रहा है।

माननीय अध्यक्षः हो गया, अब हो गया। जय भगवान जी, हो गया अब। प्लीज।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष जी, मैं छोटा ही कर रहा हूं, ज्यादा बड़ा नहीं है।

माननीय अध्यक्षः पहले बैठिए अब। पहले बैठिए प्लीज।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष जी, छोटा ही है। अध्यक्ष जी, एक चीज और मेरे संज्ञान में आयी है अभी जो मैं आपको बता देना चाहता हूँ रिठाला के अंदर एक बिल्डिंग बननी थी जिसका नाम था आईपी वंडर और मैं उस टाइम स्टेंडिंग कमेटी में मैम्बर था। मैने बार–बार इस मुद्दे को उठाया। माननीय हमारे नेता विपक्ष निगम के विकास गोयल जी भी यहाँ पर बैठे थे, उन्होंने भी उठाया। जो इमारत बन रही थी आईपी वंडर, उसका सत्रह मंजिल का नक्शा पास किया गया। सत्रह मंजिला नक्शा पास करने के बाद में अध्यक्ष महोदय, वो 23 मंजिला बना दी गयी जिसके छः मंजिल का नक्शा ही पास नहीं किया गया। तो ऐसा भ्रष्टाचार क्यों किया जा रहा है।

माननीय अध्यक्षः हो गया अब बहुत, बैठिए अब प्लीज।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष महोदय, अब जिस तरीके से इन लोगों ने आरोप लगाया 2500 करोड़। ये 2500 करोड़ के लिए हमने निगम के अंदर बार–बार बोला कि उत्तरी दिल्ली नगर निगम पहले ही परेशान है। कर्मचारियों के लिए पैसा नहीं है देने के लिए। हमारे शिक्षक परेशान हैं, सफाई कर्मचारी परेशान हैं। हमारे जो निगम के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी हैं, वो परेशान हैं। सभी लोग परेशान हैं। आप अपना पैसा क्यों नहीं ले रहे साउथ दिल्ली म्युनिसिपल कार्पोरेशन से? लेकिन कोई जवाब नहीं। अब इन्होंने माफ कर दिया। क्यों माफ कर दिया। जब तुम कर्जे में डूबे हुए हो तो आपको माफ करने का क्या मतलब है?

माननीय अध्यक्षः जय भगवान जी, बैठिए। बैठिए, प्लीज।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब हम कर्जे में डूबे हुए हैं तो हमें अपने रिर्सोसेज को, जो हमारे पास रिसोर्सेज हैं, उनसे हमें रेवेन्यू प्राप्त करना चाहिए। अब हमारे कई डिपार्टमेंट हैं जैसे कि...

माननीय अध्यक्षः भई ये लम्बा हो जाएगा, जय भगवान जी। नहीं, समय नहीं है।

श्री जय भगवानः सर, दो मिनट में खत्म कर रहा हूँ।

माननीय अध्यक्षः नहीं, अब समय नहीं है। धन्यवाद, बैठिए। नहीं, प्लीज बैठ जाइए अब।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाह रहा हूं। जैसे छोटे–छोटे डिपार्टमेंट है जैसे वैटरनरी डिपार्टमेंट हैं।

माननीय अध्यक्षः नहीं, हो गया अब बैठिए। बैठिए प्लीज।

श्री जय भगवानः अध्यक्ष महोदय, बस लास्ट में कुछ कहना चाह रहा हूँ आपसे कि एक शेर के माध्यम से मैं भारतीय जनता पार्टी के लोगों को बोलना चाहता हूँ कि

'मरने पर हमें जन्नत मिले ना मिले, मरने पर हमें जन्नत मिले ना मिले, ये दिल्ली की फिजा और ये दिल्ली की हवा मिले ना मिले, जी भर के काम करना भारतीय जनता पार्टी के लोगों आम जनता के लिए पता नहीं फिर आपको ये मौका मिले ना मिले।'

माननीय अध्यक्षः चलिए, बैठिए–बैठिए। अब मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ, ऋतुराज जी।

मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ संक्षेप में रखें। क्योंकि सीएम साहब की तरफ से संदेश आया है वो एक बजे बोलेंगे। जितने नाम मैं कुछ शॉर्ट कर रहा हूँ नामों को भी। सभी सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ जिनके नाम नहीं बोल पा रहा हूँ। वे क्षमा करेंगे।

श्री ऋतुराज गोविंदः हम तो बहुत शॉर्ट में बोलते हैं अध्यक्ष महोदय।

माननीय अध्यक्षः बहुत संक्षेप में बोलिए ऋतुराज जी, टू दी प्वाइंट्स।

श्री ऋतुराज गोविंदः अध्यक्ष महोदय, आपने हमें बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ। सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि आज एमसीडी के मसले पर चर्चा हो रही है। अध्यक्ष महोदय, मैं एक ऐसी विधान सभा को रिप्रजेंट करता हूँ कि जो कि दिल्ली का एक सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। निन्यानवे (99) प्रतिशत जो है, अन–ओथोराइज्ड कालोनी का है। निगम की एक सरकार है अध्यक्ष महोदय और आम आदमी का वास्ता डे टू डे लाइफ में अगर किसी सरकार में सबसे ज्यादा पड़ता है तो वो नगर निगम की सरकार है। लेकिन आज दिल्ली की दो करोड़ जनता बहुत नाराज है, बहुत परेशान है, बहुत दुखी है। अनऑथोराइज्ड कालोनीज के अंदर साफ सफाई नहीं होती है। कूड़े का पहाड़ ये लोग जला रहे थे जब सारी दिल्ली मिल करके माननीय मुख्य मंत्री के नेतृत्व में प्रदूषण से लड़ रही थी। हमारे माननीय मंत्री गए थे। उसके बाद भी आरोप–प्रत्यारोप का जो सिलसिला है, वो चालू रहा। उसके ऊपर में एरिया ऑफ इम्प्रूवमेंट पर काम करके ये लोग आरोप–प्रत्यारोप में लगे रहे, ठीक है। इसके साथ–साथ आज अनऑथोराइज्ड कालोनीज के अंदर इतना करप्शन कर रहे है, इतना करप्शन कर रहे हैं अध्यक्ष महोदय, कि आज सड़क ये बनाएंगे नहीं, जो एमसीडी की है।

कहते है पैसा नहीं है। पैसा क्योंकि सब खा जाते हैं। उसके बाद सफाई ये करेंगे नहीं। एक म्युनिसिपल वार्ड में अगर 200 सफाई कर्मचारी अलाटेड है तो 50 ही आता है। वो भी ताश खेल करके घर वापिस चला जाता है।

तीसरी बात, कोई आदमी लघु उद्योग यानी कि जो लीगल है। घर में मौजा बनाता है, कपड़ा सिलता है जिसमें कोई पोल्यूशन नहीं होता है। परिवार के ही चार लोग अपना रोजी रोटी कमाते हैं, उसके अंदर में भी उनको प्रॉब्लम है, वहाँ भी पहुंच जाते हैं सील करने के लिए, पैसा मांगने के लिए। हमारे यहाँ तो विचित्र कहानी हुई। एक स्कूल के चार कमरे जो जर्जर हालत में हो गया था, उसको वो बेचारा रिपेयर कर रहा था इन्होंने जा करके उस पूरे स्कूल को ही सील कर दिया। उसका नाम है, जागृति स्कूल। ऐसे–ऐसे कारनामे हैं। अध्यक्ष महोदय, आप लोगों ने हमको नॉमिनेट किया नगर निगम के अंदर और मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूँ। चार बार लगातार आप ने हमको निगम के अंदर मैम्बर के रूप में नॉमिनेट किया।

मेरा आप एटेंडेंस उठाकर के देखेंगे तो मैं हण्ड्रेड परसेंट हर बैठक में गया हूँ। ये सोच कर गया कि हो सकता है कि आज की बैठक में कुछ सकारात्मक चर्चा होगी। किसी काम की बात होगी। नगर निगम की सरकार कैसे अच्छा कर सके, जनता के लिए उस पर चर्चा होगी। कभी कोई चर्चा नहीं करते। केवल केजरीवाल को गाली देना जानते हैं। कभी किसी बात की चिंता नहीं करते हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कोई भी बिजनेस, कोई भी व्यापार, कोई भी सरकार अगर घाटे में चलती है तो वो कैसे फायदे में आएगा? आप जब तक अपने पाइप लाइन की लीकेजेज को आप रिपेयर नहीं करेंगे यानी कि आपका जो टैक्स का कलेक्शन है, उसको दुरूस्त नहीं करेंगे और आप अपने खर्चे को ठीक नहीं करेंगे तब तक आपकी सरकार कभी भी फायदे में नहीं आ सकती है। 2013 के अंदर में अध्यक्ष महोदय, दिल्ली की ये सरकार जब हम लोगों ने टेक ओवर किया था माननीय मुख्य मंत्री अरविंद केजरीवाल जी आठ हजार करोड़ का फाइनेंशिएल डेफिसिट था दिल्ली सरकार का। लेकिन 2019 के जब सीएजी ने ऑडिट किया तो सीएजी की रिपोर्ट कहती है कि पूरे हिन्दुस्तान के अंदर में कोई एक सरकार सरप्लस रेवेन्यू के साथ चल रही है। तो दैट इज अ एनसीटी ऑफ गवर्नमैंट ऑफ देहली। केजरीवाल जी के नेतृत्व में कैसे हुआ चमत्कार किये, फ्री बिजली दिये, फ्री पानी दिये, महिलाओं के लिए बसें फ्री कर दी, सब कुछ कर दिया। उसके बाद भी हम सरप्लस में चले, कैसे चले? क्योंकि हमने अपने टैक्स कलेक्शन सिस्टम को दुरुस्त किया। माननीय मंत्री बैठे हैं। 500 करोड़ का फ्लाईओवर 450 करोड़ में बनाते हैं और ये लोग 200 करोड़ का फ्लाईओवर 13 साल में जाकर के 1300 करोड़ में बनाते हैं, 1700 करोड़ में बनाते हैं। तो ये दो सरकारें हैं, दो गवर्नेंस का मॉडल है जिसको आप कम्पेयर कर सकते हैं, हर जगह पर कर सकते हैं। ऊपर से देखिए दुकान लुटा हुआ है। दुकान में जो है सो ग्राहक नहीं है, पैसा नहीं आ रहा है लेकिन फ्री की रेवड़ी बांट रहे हैं। 2400 करोड़ किसको दिये थे साउथ एमसीडी को। एक दुकानदार है हमारे पड़ोस में, हमारी दुकान तो घाटे में चल रही है और दूसरे की दुकान फायदे में चल रही है और उसको हम फ्री का रेवड़ी बांट रहे हैं। तो ये जो 2400 करोड़ जो रेवड़ी बांट रहे हैं ये लोग, ये लोग कह रहे हैं कि हम उसका साउथ एमसीडी का जो माफ कर दिये, क्यों किये भई माफ?

आज अध्यक्ष महोदय, लगभग कहते हैं कि इनकी रिक्वायरमेंट 1200 करोड़ की है। क्या सफाई कर्मचारी का तनख्वाह... इमोशनल चीजों को कैसे पूरा पॉलिटिकल बनाते हैं ये लोग। 1200 करोड़ चाहिए इनको क्या, तो सफाई कर्मचारी की तनख्वाह देने के लिए जिसके नाम पर ये लोग राजनीति कर रहे हैं और 2400 करोड़ रुपया जो इनको लेनदारी बनती है, वो ये माफ कर रहे हैं, क्यों माफ कर रहे हो भई? जब तुम्हारी दुकान घाटे में चल रही है। तो तुम उस दुकानदार का कैसे माफ कर रहे हो? 2400 करोड़ जो फायदे में चल रहा है और दूसरी इम्पोंटेंट बात आप ही लोग भेजे थे नेशनल लेजिस्लेटर्स कॉन्फ्रेन्स पार्लियामेंट में हम जैसे नौजवान को जाने का मौका मिला, सौभाग्य है हम धन्यवाद हमेशा आपका करते हैं। सेन्ट्रल हॉल में स्वर्गीय अरुण जेटली जी, फाइनेंस मिनिस्टर थे भाषण कर रहे थे। आज देश के अंदर में कोई सरकार अगर ये कहता है कि हमको पैसा नहीं मिल रहा है तो वो झूठ बोलता है because as per the Finance Commission of India which is a constitutional body 42 percent of the Revenue will directly go to the State Govt. सेन्ट्रल हॉल में बैठा हुआ नौजवान विधायक दिल्ली को रिप्रेजेंट करता हुआ जो उसको आप भेजे थे, अंगुली उठाकर के बोले, "What about Delhi?" 10 सेकेंड के लिए एकदम शांत हो गए। समझ में नहीं आ रहा है कौन नौजवान बीच में हमारे बोल दिया। लेकिन नहीं जवाब दे नहीं पाये क्योंकि Delhi is the only State which does not get 42 percent of the total revenue. अगर 42 प्रतिशत मिल जाए तो न्यूयार्क शहर को हम पीछे छोड़ सकते हैं। इतना हमारे पास रेवेन्यू होगा विकास के लिए। और एक बात सेम कांस्टिट्यूशनल जो हमारा बॉडी है, फाइनेंस कमिशन ऑफ इंडिया कहा है कि म्युनिसिपल बॉडीज को 484 रुपया पर व्यक्ति के हिसाब से as per the Census 2011 भी हमारा आबादी एक करोड़ 42 लाख है। अगर आज की तारीख में देखें जो 2021 में होगा that will be दो करोड़ से ऊपर होगा। लेकिन अगर 2011 के सेंसेस को भी माने तो केन्द्र सरकार हर नगर निगम को हिन्दुस्तान के अंदर में 484 रुपया पर हेड पर व्यक्ति के हिसाब से सेन्ट्रल ऐड देती है, दिल्ली को भी मिलता था। लेकिन आप सोचिए दिल्ली का जो म्युनिसिपल कार्पोरेशन एकमात्र म्युनिसिपल कार्पोरेशन है जो कि सेन्ट्रल ऐड 484 रुपया पर हेड के हिसाब से नहीं लेती है। भाजपा की सरकार है निगम में, केन्द्र में भाजपा की सरकार है अपने

हक का पैसा, अपने अधिकार का पैसा अपनी सरकार से नहीं लेंगे, क्यो? वहाँ से लगभग सालाना अगर आप केवल जोड़ेंगे तो 1200 करोड़ रुपया सालाना बनता है। जिससे निगम के कर्मचारियों की भी तनख्वाह मिल सकती है और उन हेल्थ वर्कर्स की भी तनख्वाह मिल सकती है जिसके नाम पर ये लोग नौटंकी कर रहे हैं। ये सारे चोर–उचक्के वहाँ पर जाकर के बैठे हुए हैं जो कि चोरी के लिए, दलाली के लिए जाने जाते हैं। आज बच्चा–बच्चा को पूछो, पूरे दिल्ली के अंदर में बच्चा–बच्चा कह सकता है आपको इनकी चोरी–चकारी, उचक्कागिरी, दलाली के बारे में। एक–एक बच्चा आपको कह सकता है अध्यक्ष महोदय।

..(व्यवधान)

श्री ऋतुराज गोविन्दः ऐ सुनिए, सुनो, लड़का गमछा पहनने से थोड़ी होता है कुछ।

..(व्यवधान)

श्री ऋतुराज गोविन्दः ए शांत रहो।

माननीय अध्यक्षः कन्क्लूड करिए, कन्क्लूड करिए प्लीज।

..(व्यवधान)

श्री ऋतुराज गोविन्दः लड़का गमछा पहन लिए तो नेता हो गए?

..(व्यवधान)

श्री ऋतुराज गोविन्दः अरे! बात सुनो, अब हिम्मत है तो फैक्टस के आधार पर जवाब दो, हल्ला मचाने से कुछ नहीं होता है।

..(व्यवधान)

श्री ऋतुराज गोविन्दः चोर की दाढ़ी में तिनका।

माननीय अध्यक्षः कन्क्लूड करिए प्लीज।

श्री ऋतुराज गोविन्दः अरे! किराड़ी पर डिबेट कर लेना आकर के, आ जाना किराड़ी

में डिबेट करने के लिए।

माननीय अध्यक्षः भई ऋतुराज जी। मिस्टर ऋतुराज।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः अरे! ऋतुराज जी, आप मुझसे बात करिए। ऋतुराज जी, आप आपस में बात मत करिए, आप मुझसे बात करिए सीधा। अब कन्क्लूड करके बैठिए, बैठिए। कन्क्लूड करके बैठिए प्लीज।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः अब बैठिए, कन्क्लूड करके।

श्री ऋतुराज गोविन्दः नहीं, मेरा समय बाकी है सर।

माननीय अध्यक्षः नहीं, बिल्कुल बाकी नहीं है अब समय।

श्री ऋतुराज गोविन्दः देखिए, हम आपकी सारी बात मानते हैं।

माननीय अध्यक्षः नहीं, बाकी नहीं है समय प्लीज। बात आपकी हो गयी है

श्री ऋतुराज गोविन्दः अच्छा, टॉपिक को डायवर्ट करने का प्रयास किया, पर हम डायवर्ट होते नहीं है सर।

माननीय अध्यक्षः आप कन्क्लूड करिए न जी। माइक की आवाज नहीं आ रही है आपको?

श्री ऋतुराज गोविन्दः अरे! हमको माइक की जरूरत ही नहीं है बोलने के लिए।

माननीय अध्यक्षः आ नहीं रही आवाज? तीनों चालू हैं।

श्री ऋतुराज गोविन्दः अध्यक्ष जी...

माननीय अध्यक्षः भई आप कन्क्लूड करिए आप प्लीज। आप कन्क्लूड करिए नहीं तो मैं अग**ला नाम बोल रहा हूँ।**

श्री ऋतुराज गोविन्दः अपने से लंबे विधायको के लिए थोड़ा लंबा माइक लगवाइए।

माननीय अध्यक्षः जल्दी कन्क्लूड करिए।

श्री ऋतुराज गोविन्दः तो अध्यक्ष जी, मैं आपसे केवल एक बात कह रहा था कि जब तक आप अपने लीकेजेज को ठीक नहीं करेंगे। जब तक आज 14 साल से एक सरकार निगम के अंदर है और अगर वो निगम की सरकार घाटे में चल रही है। आप अपने बेसिक काम को नहीं कर पा रहे हो, दिल्ली की जनता अगर दुखी है, परेशान है। अनअथोराइज कालोनिज के अंदर में तो ये स्थिति है कि 25 गज, 20 गज, 22 गज, 30 गज के गरीब लोग जो मकान बनाते हैं। वहाँ भी वो सौरभ भारद्वाज जी वाली बात है, सूंघते हुए पहुंच जाते हैं। इतनी खराब स्थिति है और 14 साल से आप सरकार में है और आप चला नहीं पा रहे हैं। कितना घोटाला का नाम लें मेरे पास तो पूरी लिस्ट है लेकिन समय बहुत कम है। मैं केवल एक ही बात कहना चाहता हूँ ये जो 2400 करोड़ का जो रेवड़ी बांटा है, इसकी जांच सीबीआई करे और दिल्ली की जनता के सामने दूध का दूध, पानी का पानी हो और इस काले चेहरे के पीछे का नकाब लोगों के सामने आये और आने वाले समय में लोगों ने ठान लिया वो बेटी ब्याह का बात कर रहे थे। अब दिल्ली वालों ने ठान लिया है, इस बार बेटी का ब्याह दोबारा करायेंगे और बढ़िया दुल्हा से करवायेंगे। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्री विजेन्द्र गुप्ता जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, यहाँ जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग हुआ है लोकतंत्र में सारी मर्यादाओं को तोड़ा जा रहा है। तीन डिग्री, चार डिग्री के टेम्प्रेचर में महिला पार्षद और महापौर भूख–हड़ताल पर बैठे हैं पिछले दस दिन से। लेकिन यहाँ जिस तरह की बात कही जा रही है, वो निहायत शर्मसार कर देने वाली है।

..(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, मुझे अपनी बात कहने दी जाए।

माननीय अध्यक्षः मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ ये तरीका ठीक नहीं है। अरे भई! वो दुनिया समझेगी, सुनेगी अगर वो केवल कार्पोरेशन का नाम ले रहे

हैं, बैठे हैं, किसानों का नाम नहीं ले रहे हैं तो पब्लिक को समझ में आएगा न अपने आप। क्या आपके शोर मचाने से उनकी बात अधूरी रह गयी है।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, आप खुद ही ऐसी अजीब बात कर रहे हैं। आपकी चर्चा किसानों का है, क्या है।

माननीय अध्यक्षः मैं उनको समझा रहा हूँ भई।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आप खुद डायवर्ट कर रहे हैं चर्चा को।

माननीय अध्यक्षः आप शुरू करिए न।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आप डायवर्ट कर रहे हैं चर्चा को, ये सदन चला रहे हैं आप? ऐसे सदन चलता है।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः राखी जी, आप बैठिए भई । आप शुरू करिए विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बात कहाँ की हो रही है, बात कहाँ कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः शुरू करिए आप।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः इसको कहते हैं लंका में सारे बावन गज के हैं क्या? हम तो सोच रहे थे थोड़े बहुत हैं। ये तो सारे बावन गज के हैं।

माननीय अध्यक्षः अखिलेश जी, प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बस, हाँ बोलने दीजिए।

माननीय अध्यक्षः अब कोई डिस्टर्ब नहीं करेगा। मुझे समझ नहीं आता कि डिस्टबैंस क्यों है।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आज चिंता ये है कि सवैंधानिक व्यवस्था के अंतर्गत जो तीसरे पायदान की सरकार है, पंचायती राज व्यवस्था उसका यहाँ सरेआम डे–लाइट में हत्या की जा रही है, मर्डर ऑफ डेमोक्रेसी, मैं इसको इतना कहूंगा।

माननीय अध्यक्षः भई देखिए, टिप्पणी मत करिए। मैं बार–बार बोल रहा हूँ टाइम खराब होगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः कि निगम निकाय, पंचायती राज व्यवस्था जो किसी भी व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण अंग है। क्योंकि सीधा लोगों से जुड़ा हुआ है, लोगों की सुविधाओं से जुड़ा हुआ है। लोगों को सीधा, लोगों के द्वारा सीधा इसको चलाया जाता है। वित्तीय रूप से उसको पंगु बनाने का षड़यंत्र किया गया और 74वें संशोधन में जो संविधान में स्टेट फाइनेंस कमिशन का प्रावधान किया गया था निगमों को वित्तीय रूप से मजबूत बनाने के लिए, उसी फाइनेंस कमिशन की रिपोर्ट के विपरीत उसकी रिकमंडेशन के विपरीत फाइनेंस कमिशन की रिपोर्ट की आड़ में उनकी रिकमंडेशन के विरूद्ध यहाँ पर निगमों का पैसा बढ़ाने की बजाय काटा गया। ये कैसे हो सकता है कि एक नगर निगम को अगर प्रोपोर्शनेट ऐवरेज कैलकुलेशन के आधार पर मैं कहता हूँ जो पैसा निगमों को आपके शासन में आने से पहले मिलता था प्रोपोर्शनेट ऐवरेज उसको कम कर दिया गया है। ये एक षड़यंत्र चल रहा है राजनीतिक स्वार्थ सिद्धि का, स्वार्थ का और उसका बदला किससे लिया जा रहा है, उसका मोहरा किसको बनाया जा रहा है? जनता को। अगर आज निगम वित्तीय रूप से पंगु होंगे तो पंचायती राज व्यवस्था में उसका खामियाजा जनता को भुगतना पड़ता है क्योंकि जनता को मिलने वाली सुविधाओं पर उसका असर पड़ रहा है। एक बहुत बड़ा घोटाला हुआ है, इस सरकार ने किया है नगर निगमों के फंड में। और मैं चुनौती देता हूँ इस सरकार को, इसकी सीबीआई जांच कराई जाए। मुख्य मंत्री सड़क योजना की आड़ में 1000 करोड़ रुपये सालाना का घोटाला। ये नगर निगमों की सड़कों का पैसा है, ये 1000 करोड़ रुपये नगर निगमों की सड़कों का पैसा है नगर निगम की सड़कें बननी थी। नगर निगम को मिलने वाले पैसे को काटा गया। मुख्य मंत्री सड़क योजना के नाम पर कुछ चंद विधायकों को निगम के उस पैसे की बंदरबांट की गई। एक–एक असेंबली में 80–80 करोड़ रुपया और उस 1000 करोड़ रुपये को अगर निगम को दिया जाता तो दिल्ली की सड़कें, गलियां तैयार होती। दो साल से 2000 करोड़ रुपया वो नगर निगम की गलियों तक पहुंच नहीं पाया।

अध्यक्ष जी, पूरे सम्मान से नतमस्तक होकर पूरे आदर से मैं आपसे गुहार लगाता हूँ,

इस सदन में आप अधिकारियों को आदेश दीजिए और एक विशेष सदन की बैठक एक दिन और एक्सेटेंड कीजिए और मुख्य मंत्री सड़क योजना का पूरा ब्यौरा यहाँ लाकर सदस्यों को दीजिए और उस पर चर्चा करवा लीजिए, दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। अध्यक्ष जी, मेरे पास ये डाक्युमेंट है, मैं आपको देना चाहता हूँ, आपके माध्यम से सरकार को पहुँचाना चाहता हूँ। दिल्ली जल बोर्ड, जिसने पांच साल में इस सरकार के शासन काल में 31428 करोड़ रुपया लोन लिया है। कमाल की बात है! 31,428 करोड़ रुपया अब आप देखिए, जल बोर्ड की जो आमदनी है सालाना, वो 2,392 करोड़ और इन्ट्रेस्ट दे रहा है जल बोर्ड 2,973 करोड़ रुपये। यानी सालाना जितनी आमदनी नहीं है, उससे ज्यादा इन्ट्रेस्ट दे रहा है और फिर भी लोन लिए जा रहा है। पूरा जल बोर्ड का भट्टा बिठाने का काम मुख्य मंत्री केजरीवाल जी की सरकार ने किया है ये मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ। अभी जिस ढ़ाई हजार करोड़ की बात कर रह हैं, मैं ये 28 अक्टूबर, 2013 का ऑर्डर का कुछ अंश यहाँ पर पढ़ना चाहता हूँ। क्योंकि समय की सीमाएं हैं, मुझे संक्षिप्त में अपनी सारी बात कहने की कोशिश करनी है। इस ऑर्डर में एक कैबिनेट डिसीजन हुआ, जब कॉर्पोरेशन का ट्राइफरकेशन हुआ तो सिविक सेन्टर ईस्ट दिल्ली को तो पटपड़ गंज इंडस्ट्रियल एरिया में हेड ऑफिस बनाने को मिल गया। साउथ दिल्ली के लिए बात आयी तो ये हुआ कि जो सिविक सेन्टर है, उसको साउथ दिल्ली भी इस्तेमाल करेगा और क्या–क्या उसको देना पड़ेगा। ये 28 अक्टूबर, 2013 का ऑर्डर है; डीएलबी का डायरेक्टर ऑफ लोकल बॉडीज। पहला, facility management charges including house keeping, mechanical equipment etc. ek cheej electricity consumption charges, water consumption charges, charges for deployment of security personnel, any other charges for common works or services or any other expenditure which is made for both the corporations यानी कि इसके अलावा कोई खर्चा ऐसा होता है तो दोनों कॉर्पोरेशन मिलके करेंगी।

In addition, the South Delhi MCD, South Delhi Municipal Corporation is further directed that henceforth the said charges should be reimbursed to the North Delhi Municipal Corporation on monthly basis. ये दिल्ली की

सरकार को ऑर्डर है। इसके आधार पर आज भी दोनों नगर निगमों में पैसे का लेन–देन हो रहा है। लेकिन एक बात तो साफ हो गयी, आपने स्पष्ट कर दी। जब मुख्य मंत्री जी के घर के बाहर पार्षदगण भूख हड़ताल पे बैठे तो आम आदमी पार्टी में खलबली मच गयी और इन्होंने कहा कि इनके खिलाफ मुख्य मंत्री जी ने कहा, डांटकर अपने साथियों को अगर इनके खिलाफ कोई भ्रष्टाचार का मामला लेकर नहीं आए निगमों के खिलाफ तो तुम सब सस्पेंड। अब पूरे पाण्डेय जी इधर भाग रहे हैं, भारद्वाज जी उधर भाग रहे हैं। मंत्रीगण अपनी कुर्सी बचाने के लिए अधिकारियों से कह रहे हैं, ''कागज निकालो, कागज निकालो।'' अब इनके हाथ में ये ट्राइफर्केशन के कागज आ गए। अब इन्होंने कहा... किसी ने कहा ये मुख्य मंत्री जी को बता देते हैं, ढ़ाई हजार करोड़ रुपये का वो रेंट का मामला है। तो दूसरे ने कहा कि तुझे अभी तेरी सीट–वीट सब छीन लेंगे। बेवकूफ! ये कोई इश्यू है। अरे! दूसरे ने कहा, ''भैया, ये हमारा मुख्य मंत्री केजरीवाल ऐसा ही है। ये ऐसे इश्यू बना देता है, पहले नोटिफिकेशन निकालता है, अगले ही पल उसे फाड़ देता है। तो भैया ये ऐसे ही हैं। ये जो कागज है, बस ये ही बता दो। तो ये बात स्पष्ट हो गयी कि नगर निगम में कोई घोटाला इनके सामने ये लाने में सफल ही नहीं हुए। तो इसलिए ये नॉन इश्यू को इश्यू बनाने के लिए सामने आ गए। अब आगे आ गयी बात, वास्तविकता ये है केजरीवाल जी की बड़ी साफ पॉलिसी है कि भई दिल्ली में न तो सेन्टर को काम करने दो, न कॉर्पोरेशन को काम करने दो, दोनों के काम रोको। दोनों के काम रोको और दोनों को मैं काम नहीं करने दूँगा क्योंकि मेरी

सरकार है और जब तक दिल्ली की सरकार में हम बैठे हैं, न नगर निगम को काम करने देंगे, न केन्द्र सरकार को दिल्ली में। अब आप देखिए, ये साहब बैठे हैं हमारे, नजफगढ़ से आते हैं मंत्री जी। इनके एरिया में 100 बेड का... मैं तो चाहूँगा मुख्य मंत्री जी रिप्लाइ करें मेरी बातों का। अगर नहीं रिप्लाइ करेंगे तो इसका मतलब ये है कि इनके पास कोई जवाब नहीं है। 100 बेड का हॉस्पिटल बनना है दो साल से, 18 दिसम्बर, 2018 से, इमरान साहब कहां चले गए फाइल को रोक कर... आप बैठिए, बैठिए मंत्री जी, आप अपनी बारी में बोलना।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी, अगर आपको बोलना है, मंत्री जी, आपको बोलना है? एक सेकंड।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मंत्री जी, बैठिए। मंत्री जी, बैठिए, आप घबराइए नहीं।

माननीय अध्यक्षः एक सेकंड विजेन्द्र जी। एक सेकंड मुझे बता देने दीजिए। आपको बोलना है तो आप परमिशन ले के, उनको बैठना पड़ेगा, आप बोल सकते हैं। ऐसे खड़े हो के नहीं बोल सकते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः 18 दिसम्बर।

माननीय अध्यक्षः नहीं, आपको कुछ कहना चाहते हैं, विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अरे! आप बैठिए न। आप बैठिए।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आपको बताया नहीं तरीका। आपको बताया नहीं, ऑर्डर। बोलने का तरीका नहीं पता आपको, बैठिए आप, बैठिए।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी। मंत्री जी खड़े हैं, बोलना चाह रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आपको खड़ा हो के बताया न उन्होंने तरीका।

माननीय अध्यक्षः भई दो मिनट रुकिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः उनको कहिए आप। आप बैठिए।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, कुछ बोलना है उनको।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अभी आप बैठेंगे।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, मैं क्या कह रहा हूँ, सुन लीजिए मेरी बात।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः नहीं खड़े किए उन्होंने। आप बैठिए अभी। सर आपकी रूलिंग को भी कोई नहीं मान रहा।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं, बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः ये आपकी रूलिंग को भी नहीं मान रहे।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी कुछ कहना चाहते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अब आपकी रूलिंग को भी इस सदन में नहीं मान रहे तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अब बताइए, आपने रूलिंग दी। बैठिए आप पहले। पहले आप बैठिए।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, आप बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आप बैठिए। अध्यक्ष जी, पहले उनको बिठाइए।

माननीय अध्यक्षः नहीं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः देखिए, फिर आप डायरेक्शन दीजिए।

माननीय अध्यक्ष: मंत्री जी ने परमिशन।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: पहले नहीं खड़े होंगे, वो आप।

माननीय अध्यक्ष: मंत्री जी बोलेंगे।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: नहीं, पहले नहीं खड़े होंगे।

माननीय अध्यक्ष: ऐसे नहीं चलेगा। आप बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: बैठिए आप। बैठिए आप। पहले आप बैठिए।

माननीय अध्यक्ष: मंत्री जी का। विजेन्द्र जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: ऐसा नहीं है, मैं नहीं बैठूंगा। वो बैठेंगे। आप मुझे कहेंगे फिर मैं बैठूंगा।

माननीय अध्यक्ष: आप इस बात को समाप्त...

श्री विजेन्द्र गुप्ता: आप एक बार उनको बैठाइए न, फिर मैं बैठूंगा। फिर उनको खड़ा कीजिए। पहले ही थोड़ा खड़े हो जाएंगे। जब मैं आपकी रूलिंग पे ही कह रहा हूँ। आपकी वजह से।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: अखिलेश जी, आप मत बोलिए बीच में, बैठ जाइए।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: बैठिए, बैठिए।

माननीय अध्यक्ष: आपको कुछ मालूम नहीं है।

श्री विजेन्द्र गुप्ता: बैठिए, बैठिए। पहले बैठाइए उन्हें।

माननीय अध्यक्षः बेमतलब बोलने लगते हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः पहले उन्हें बैठाइए।

माननीय अध्यक्षःभई बैठ जाइए प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मंत्री जी, वहाँ से खड़े हो के नहीं, पहले बैठेंगे, आपसे रिक्वेस्ट करेंगे फिर आप मुझसे कहेंगे, मैं बैठूंगा फिर वो खड़े होंगे।

माननीय अध्यक्षः चलिए, मैं ये भी बात मान लेता हूँ आपकी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अब आप उनको रोकिए। आप बैठिए।

माननीय अध्यक्षः एक सेकंड के लिए बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः एक बार बैठिए। ये नहीं होता।

माननीय परिवहन मंत्री (श्री कैलाश गहलोत): उनका कोई अधिकार नहीं है मुझे बोलने का कि ये बैठें।

माननीय अध्यक्षः मैं आपको समय दे रहा हूँ।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः ऐसे तो मुख्य मंत्री जी भी नहीं कहते।

माननीय परिवहन मंत्रीः अध्यक्ष जी, पहले आप उनको बोलिए, पहले आप उनको बोलिए। उनका कोई अधिकार नहीं है बोलने का कि मैं बैठूँगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ताःअध्यक्ष जी, ऐसा थोड़ी ना, आप बैठिए। आप चौधरी हैं क्या? आप सदन में चौधरी नहीं हैं।

माननीय परिवहन मंत्रीः अध्यक्ष जी, उनको कुछ बोलना है तो आपको बोलेंगे, मुझे नहीं बोलेंगे वो।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः चलिए, बैठिए आप।

माननीय अध्यक्षः ऐसे नहीं चल पाएगा, ऐसे नहीं चल पाएगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आप बैठिए। बताओ, मैं बोल रहा हूँ।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः ऐसा है बिधूडी जी, आप समझदार हैं अगर मंत्री जी...

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मंत्री जी, सुनिए। मंत्री जी आपसे कहें, आप मुझे कहेंगे, मैं चुप होऊंगा। फिर वो कहें, वो खड़े हो के बोलना शुरू...

माननीय अध्यक्षः वो तो कह रहे हैं ना, मुझे बोलना है।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः नहीं।

माननीय अध्यक्षः खड़े हुए हैं वो।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः नहीं, नहीं, मंत्री जी।

माननीय अध्यक्षः उनको बोलना है।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मैं देखिए।

माननीय अध्यक्षः पहले आप बैठ जाइए। मैं ऐसे।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः हमने आज भी आपसे कहा था, हम अपनी बारी में बोलेंगे।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी अगर खड़े हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः नहीं, मुझे बोलने, मुझे बात ही पूरी नहीं करने दी जा रही।

माननीय अध्यक्षः मंत्री जी कोई वक्तव्य देना चाहते हैं तो बैठिए। कैलाश जी। बाकी सब सदस्य चुप हो जाएंगे। जब अब मंत्री जी बोलेंगे। बैठिए, राजेश जी।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः ऐसे कैसे? जब मैं बोल... आप बैठ जाइए। आप बैठिए थोड़ी देर।

माननीय अध्यक्षः बाकी सब सदस्य...

..(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ताः पीछे बैठिए। कमाल कर रहे हैं आप! सदन का अध्यक्ष जी, नियम कानून का पालन नहीं कर रहे आप। बैठिए।

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः झा साहब, बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मुझे अपनी बात पूरी करनी दी जाए।

माननीय अध्यक्षः भई विजेन्द्र जी, ये तो नहीं चलेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, ऐसे नहीं।

माननीय अध्यक्षः ऐसे नहीं चलेगा। वो समय मांग रहे हैं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आपने मुझे खड़ा किया है, नहीं?

माननीय अध्यक्षः नहीं।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः उन्हें बैठाइए आप। आप बैठाइए, मैं बोलूं। उनको बैठाइए आप, उसके बाद मैं बैठूंगा, फिर वो खड़े हों।

माननीय अध्यक्षः बैठ जाइए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बैठ जाइए बस। हाँ।

माननीय अध्यक्षः बैठिए। विजेन्द्र जी, बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अब बताइए? अब आप क्या कहना चाहते हैं?

माननीय अध्यक्षः दो मिनट कोई नहीं बोलेगा।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः आप अब बताइए।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः अरे भई, क्या हो रहा है ये, कौन–सा तरीका है ये? मैं कर रहा हूँ बात। बैठिए, बाजपेयी जी। बाजपेयी जी, बैठिए प्लीज। देखिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अब आप जो आप रूलिंग देंगे, मैं मानने को तैयार हूँ।

माननीय अध्यक्षः सदन का नियम ये है, अगर मंत्री जी बीच में समय मांगे तो उस सदस्य को सुन लेना चाहिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः हाँ, तो मैं मना थोड़ा ही कर रहा हूँ। मैंने कब मना करा है? वो पहले ही खड़े हो के बोलना शुरू हो गए।

माननीय अध्यक्षः बैठिए, बैठिए। उन्होंने हाथ खड़ा किया है। अब आप बैठिए न। आप बैठिए प्लीज। कैलाश जी बोलिए। भई ये बीच बीच में टिप्पणी करना बन्द करिए सब सदस्य।

माननीय परिवहन मंत्रीः अध्यक्ष जी, ये वाकई में ही बड़ी विचित्र बात है कि डिबेट क्या टॉपिक है, किस चीज में हम बात कर रहे हैं, वो एक विधान सभा का इश्यू उठा के और डायरेक्टली मुझे एड्रेस कर रहे हैं। अगर उनको एड्रेस करना है वो स्पीकर सर को एड्रेस करेंगे।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः भाई विजेन्द्र जी, आप दो मिनट उनको बोलने तो दीजिए। उनको बोलने तो दीजिए।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः नहीं विजेन्द्र जी, प्लीज।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः तो आप बैठिए ना। आप बैठिए ना। उनको बोलने तो दीजिए।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः उनको बोलने दीजिए। उनको प्लीज बोलने दीजिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मैं इतना कह सकता हूँ कि मंत्री जी ने कहा।

माननीय परिवहन मंत्रीः अध्यक्ष जी, आप मुझे।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः ये कैसे भाग रहे हैं? ये अस्पताल पूरी दिल्ली के लिए है।

माननीय अध्यक्षः आपने बोला है।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः दिल्ली के लिए है।

माननीय अध्यक्षः आपने बोला है, उनको उत्तर देने दीजिए। बोला है, वो बोलना चाहते हैं कुछ।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः बोलिए, बोलिए।

माननीय अध्यक्षः बोलिए। अब बीच में मत उठिएगा प्लीज।

माननीय परिवहन मंत्रीः अध्यक्ष जी, पहले मैं ये समझना चाहूंगा कि ये कौन–से रूल के अण्डर ये क्वेश्चन मुझे पूछ रहे हैं। टॉपिक कुछ और है। टॉपिक कुछ और है ये कौन से रूल के अन्दर ये क्वेश्चन हमसे पूछना चाहते हैं, पहले ये स्पष्ट करें उसको। ऐसे, ऐसे जवाब नहीं मांगे जाते हैं।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः कम्प्लीट करिए विजेन्द्र जी। कम्प्लीट करिए। अब अरे भई अब मुझे देखना है ना समय हो गया, नहीं हो गया, आपको देखना है?

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, मैं ये ही इसलिए चाहता था कि हमारे गहलोत जी ऐसा लग रहा है जैसे कुछ चोरी पकड़ी गयी।

माननीय अध्यक्षः अब आप विषय। विजेन्द्र जी, आप विषय रखिए अपना प्लीज।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः जी, और इसलिए बिल्कुल जिसका कोई लॉजिक नहीं है उस तरह की बात वो यहा¡ कह रहे हैं। अब मैं आपको पूरी बात बता देता हूँ।

एक 100 बेड का... कोरोना चल रहा है। इस कोविड काल में 100 बेड का हॉस्पिटल नजफगढ़ में बनकर तैयार हो चुका होता, लोगों को उसका सहयोग मिल रहा होता, लोगों का इलाज हो रहा होता, लोगों की जिदंगी बच रही होती। यहाँ इमरान साहब बैठे हैं, मैं इनको चुनौती देता हूँ, इनके मंत्रालय को, इस सरकार को कि 18 दिसम्बर, 2018 से फाइल रोक कर बैठे हैं, अस्पताल की फाइल को क्लीयर नहीं कर रहे हैं। सेन्ट्रल मिनिस्टर को लिख रहे हैं, मिनिस्ट्री लिख रही है। लेकिन उसके बावजूद।

माननीय अध्यक्षः विजेन्द्र जी, अब आप विषय...

श्री विजेन्द्र गुप्ताः एक मामला नहीं है, एक मामला नहीं है।

माननीय अध्यक्षः विषय ढ़ाई हजार करोड़ रुपये पर बोलना है क्या कुछ?

श्री विजेन्द्र गुप्ताः अध्यक्ष जी, एक मामला नहीं है। नरेला, बवाना का फलाइओवर रीजनल रेपिड ट्रांजिट सिस्टम मेरठ– दिल्ली का जो रूट था, उसको तीन साल लेट करवाया। वो मंत्री जी भी यहीं हैं; गहलोत साहब। और सुनिए आप, उसके बाद मेट्रो फेज–4 को रोका। ''नगर निगम को काम मत करने दो। केन्द्र को काम मत करने दो। झूठा आरोप लगाओ डिमोरलाइज करो, पंचायती राज को बंद करो।''

माननीय अध्यक्षः आप बैठिए, विजेन्द्र जी। आपकी बात मैं समझ गया हूँ।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः मुख्य मंत्री सड़क योजना घोटाला करो और ये बात यहाँ पर सदन की बैठक बुलाकर अपनी राजनीतिक यहाँ पर भाषणबाजी करो।

माननीय अध्यक्षः बहुत–बहुत धन्यवाद। बैठिए, प्लीज बैठिए।

श्री विजेन्द्र गुप्ताः ये पूरी तरह से मैं इस पूरे सरकार के इस रवैये की भर्त्सना करता हूँ। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। धन्यवाद। अभी रामवीर सिंह बिधूड़ी। श्री राम बिधूड़ी जी।

श्री ओम प्रकाश शर्माः बार–बार नम्बर काट देते हो।

माननीय अध्यक्षः नहीं, अब नहीं। 12 लोग छोड़ दिये मैंने।

श्री ओम प्रकाश शर्माः आपका काम ही ये है, मैं जा रहा हूँ फिर।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः कोई बात नहीं दो मिनट बुलवा दीजिए।

माननीय अध्यक्षः अरे भई, मैं नहीं अलाऊ नहीं, बिधूड़ी जी, मैं अलाऊ नहीं करूँगा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दो मिनट बुलवा दीजिए अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः नहीं, मेरे पास 15 लोगों की लिस्ट है। 8 लोग मैंने

सत्ता पक्ष के लिये।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दो मिनट बुलवा दीजिए।

माननीय अध्यक्षः मैंने डिप्टी स्पीकर को छोड़ दिया है। मैंने डिप्टी स्पीकर को भी छोड़ दिया है।

श्री ओम प्रकाश शर्माः इसका मतलब क्या है?

माननीय अध्यक्षः 18 लोग छोड़े हैं। 18 लोगों की लिस्ट है। मैंने 12 लोग छोड़ दिये हैं। नहीं, ऐसा नहीं चलेगा। नहीं ओम प्रकाश जी, ऐसा नहीं चलेगा।

..(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षः आप जो मर्जी आए बोलिए बिधूड़ी जी शुरु करिए आप।

श्री ओमप्रकाश शर्माः .. मैं बहिष्कार करता हूं।

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी शुरु करिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दो मिनट उनको दे दीजिए।

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं मैं अलाउ नहीं करूंगा बिलकुल। मैंने राखी जी को छोड़ दिया, राखी जी को छोड़ दिया।

श्री ओमप्रकाश शर्माः अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः इसमें 8 लोग मैंने छोड़े हैं। सत्ता पक्ष के 8 लोग छोड़े हैं मैं लिस्ट दे सकता हूं। बैठिये, बैठ जाइये भाई। राखी जी बैठ जाइये प्लीज। अरे सीएम साहब को बोलना है उनको जाना है आप।

श्री ओमप्रकाश शर्माः अरे! सीएम तो बोलते रहते हैं सारे दिन बोलते हैं सीएम।

माननीय अध्यक्षः आप बैठिए, बोलिए बिधूड़ी जी, बिधूडी जी बोलिए। नहीं मैं कुछ नहीं सुन रहा हूं। नहीं प्लीज, बिधूड़ी जी बोलिए शुरु करिए भई।

.......(व्यवधान).....

माननीय अध्यक्षः बिधूड़ी जी, शुरु करिए, अब शुरु करिए शांत हो जाएगा मामला आप शुरु करिए। सदन की गरिमा को समझ लीजिए थोड़ा ये टिप्पणियां बंद कर दीजिए। चलिए बिधूड़ी जी चलिए प्लीज।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन के बहुत ही वरिष्ठ सदस्य माननीय सौरभ भारद्वाज जी ने निगमों में ढ़ाई हजार करोड़ रुपये के घोटाले के आरोपों के संबंध में अल्पकालिक चर्चा प्रारंभ की है जब कोई लेन–देन हुआ ही नहीं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, तो घपला और घोटाला कैसा है, कहां हुआ। आदरणीय अध्यक्ष जी, निगमों पर घपले के जो आरोप लगाए हैं वो पूरी तरह से निराधार हैं आधारहीन हैं। आदरणीय अध्यक्ष जी, हाउस का कुछ माहौल थोड़ा ऐसा बन गया उसको थोड़ा खुशनुमा होना चाहिए। आदरणीय भारद्वाज जी की ओर से बेटी रोटी का रिश्ता भी

जोड़ा गया है। आदरणीय अध्यक्ष जी, ये रिश्ता तो 2013 में आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के साथ जोड़ा था अब यदि तलाक हो गया है तो हमारा रिश्ता तो आपके साथ भारद्वाज जी बड़े भाई छोटे भाई का है हम तो जिस बेटी को छोड़ दिया है बड़े भाई होने के नाते 60 परसेंट जो बेटी अच्छे से गुजारा कर सके हम खर्च करेंगे और 40 परसेंट आप खर्च करेंगे ये है हमारा तो आपके साथ रिश्ता। आदरणीय अध्यक्ष जी, आदरणीय मुख्य मंत्री जी यहाँ बैठे हुए हैं कल कृषि सुधार कानूनों की प्रतियों को फाड़ दिया गया। यही कार्य 2013 में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री राहुल गांध ी जी ने किया था और तब से लेकर आज तक उनकी पार्टी का ग्राफ निरंतर गिरता गया। उनको सत्ता में आने का अवसर नहीं मिला ये बड़ा अशुभ है। मैं आदरणीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह कर रहा हूँ कि इस पर खेद प्रकट कर लें ये बहुत अशुभ है। आप देख लीजिए उन्होंने भी अध्यादेश की प्रतियां फाड़ी थीं। आदरणीय अध्यक्ष जी, जिस घोटाले की बात हो रही है अब दिल्ली सरकार के मंत्री मंडल ने जो फैसला लिया है उस फैसले के विरुद्ध ही आप आरोप लगा रहे हैं। 16 मार्च, 2012 को ये फैसला लिया दिल्ली मंत्री मंडल ने जब 3 नगर निगम बनाई गईं तो ये तय हुआ कि ईस्ट दिल्ली का जो आफिस है वो पड़पड़ गंज में होगा। नॉर्थ एमसीडी का जो आफिस है वो जो मौजूदा सिविक सेंटर है श्रद्धेय श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के नाम पर और साउथ दिल्ली एमसीडी का जो आफिस है उसके लिए पहले द्वारका में जमीन देने की बात हुई लेकिन अभी वो आईटीओ के पास जमीन आवंटित हुई है। अध्यक्ष जी, उस समय ये फैसला लिया दिल्ली सरकार ने कि जब तक साउथ दिल्ली एमसीडी की बिल्डिंग बनके तैयार नहीं हो जाती है उनका दफ्तर सिविक सेंटर में चलेगा और उस आफिस के रख रखाव पर जो खर्चा होता है उसको नॉर्थ एमसीडी और साउथ एमसीडी 50–50 परसेंट उस खर्चे को उठाएंगी। उसमें कहीं यह नहीं लिखा गया कि साउथ एमसीडी को नॉर्थ एमसीडी को कोई किराया देना है ये तो रिकार्ड की बात है। आदरणीय मुख्य मंत्री जी रिकार्ड उठा के देख लें केबिनेट का जो फैसला है उसको उठा के देख लें अगर हम गलत बयानी कर रहे हैं। आदरण ीय अध्यक्ष जी, जो उस समय के तत्कालीन आयुक्त थे 4 अप्रैल, 2012 को एक आदेश भी उनकी ओर से जारी किया गया और उसके बाद एनडीएमसी आयुक्त ने जब ये आरोप लगाने का सिलसिला शुरु हुआ तो उन्होंने 6 अक्टूबर, 2020 को 6

अधिकारियों की एक कमेटी बनाई और कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि कोई किसी तरह का घोटाला ही नहीं हुआ। ये रिपोर्ट 14 दिसंबर, 2020 को सौंपी गयी। घपले के आरोप बिलकुल असत्य हैं यह रिपोर्ट में कहा गया है। आदरणीय अध्यक्ष जी, रिपोर्ट में बताया गया है कि एनडीएमसी के आयुक्त ने 8 दिसंबर, 2020 को जो वित्त वर्ष 2020–2021 के संशोधित बजट अनुमान तथा वित्त वर्ष 2021–2022 के बजट अनुमानों में कहीं पर भी एसडीएमसी से किराये के तौर पर नॉर्थ एमसीडी को किसी आय का जिक्र नहीं किया है तो घोटाला कहां से हुआ। आदरणीय अध्यक्ष जी, 15 दिसंबर, 2018 को एसडीएमसी ने दिल्ली सरकार के पास एक प्रस्ताव भेजा, वो प्रस्ताव क्या था कि 6 जनवरी, और उस प्रस्ताव में सोलर पैनल लगाने तथा कार्यालय के निर्माण हेतु 10 वर्षों के लिए 500 करोड़ रुपये के म्यूनिसिपल बांड्स जारी करने की अनुमति मांगी गई। पुनः 6 जनवरी, 2020 को साउथ एमसीडी ने दिल्ली सरकार को एक पत्र लिखकर फिर से 500 करोड़ रुपये के म्यूनिसिपल बांड्स जारी करने की अनुमति मांगी। आदरणीय अध्यक्ष जी, पत्र में यह भी कहा कि अनुमानित मिलने पर भारत सरकार के मतलब अनुमति अगर मिल जाती है दिल्ली सरकार की ओर से तो जो भारत सरकार का जो शहरी विकास मंत्रालय है वो एसडीएमसी को 26 करोड़ रुपये का इनसेंटिव भी देगा। आदरणीय अध्यक्ष जी, प्रगति मैदान व आईटीओ के नजदीक आईपी इस्टेट में आवंटित प्लाट पर एसडीएमसी का कार्यालय बनाने पर करीब 730 करोड़ रुपये की राशि खर्च होने का अनुमान था। एसडीएमसी ने यह प्रस्ताव किया कि आईपी इस्टेट में जो कार्यालय बनेगा उसका कुछ हिस्सा कमर्शियल प्रयोग में लाया जाएगा ताकी इससे साउथ दिल्ली एमसीडी को अतिरिक्त आय हो सके। आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत हैरानी की बात है, माननीय मुख्य मंत्री जी यहाँ बैठे हुए हैं कि दिल्ली सरकार ने 20 नवम्बर 2019 को ही एसडीएमसी के 500 करोड़ रुपये के जो म्यूनिसिपल बांड्स जारी करने के प्रस्ताव जो भेजा था उसको खारिज कर दिया। आप मुझे बताइए अगर दिल्ली की सरकार साउथ दिल्ली एमसीडी के प्रस्ताव को मंजूरी दे देती तो आज साउथ दिल्ली एमसीडी का आफिस बनकर तैयार हो जाता तो अनुमति तो दिल्ली सरकार ने नहीं दी है और आरोप लगाया जा रहा है साउथ दिल्ली एमसीडी के ऊपर या नगर निगमों के ऊपर कि 2500 करोड़ रुपये का घोटाला हो गया। दिल्ली के मुख्य मंत्री राजनेता भी हैं और दिल्ली के मुख्य मंत्री

बड़े सीनियर ब्यूरोक्रेट रहे हैं वो इनकम टैक्स के कमिश्नर भी रहे हैं घोटालों के बारे में वो अच्छी तरह से जानते हैं मैं उनकी चर्चा नहीं करना चाहता हूँ लेकिन आज हम जानना चाहेंगे मुख्य मंत्री जी से कि आखिर ये 2500 करोड़ रुपये का घोटाला कहाँ हो गया जब कोई लेन–देन ही नहीं हुआ कोई पैसे का कोई ट्रांजेक्शन नहीं हुआ तो इस तरह के आरोप दिल्ली की एक जिम्मेदार सरकार की ओर से लगाए जाएं, मैं इस पर खेद प्रकट करना चाहता हूँ। इस तरह के आरोप नहीं लगाने चाहिए। इस दिल्ली शहर को... मैं बार बार कह चुका हूँ क्योंकि दिल्ली में फुल फलैश स्टेटहुड नहीं है हम सभी को मिलकर इस दिल्ली शहर को हमें वर्ल्ड क्लास सिटी बनाना है तो वर्ल्ड क्लास सिटी इस तरह के हल्के आरोप लगाकर हम दिल्ली को नहीं बना सकते हैं। कोई आरोप में दमखम तो हो आज बताएं तो सही कि 2500 करोड़ रुपये का घोटाला क्या है और मैं इस हाउस में कह रहा हूँ अगर ये साबित हो जाए कि 2500 करोड़ रुपये का घोटाला हुआ है या साउथ एमसीडी को कोई पाई पैसा नॉर्थ एमसीडी को देना था मैं इस सदन से इस्तीफा देकर अपने घर चला जाउंगा। मैं एलान कर रहा हूँ, नहीं तो जो लोग आरोप लगा रहे हैं वो इस सदन में खड़े होकर माफी मांगे, आज मैं ये आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करना चाहता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, दिल्ली सरकार एसडीएमसी को मुख्यालय बनाने के लिए पैसा देगी नहीं, बांड्स जारी करने की इजाजत नहीं देगी और अपने ही उस फैसले को भी नहीं मानेगी जिसमें जब तक नया मुख्यालय बनने तक एसडीएमसी **को** मुख्यालय सिविक सेंटर में ही रहने देने की बात कही गयी है तो फिर सरकार किस मुंह से घपले की बात कह रही है। यह जानकारी हम सदन के नेता आदरणीय मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी से चाहते हैं।

अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात को समाप्त कर रहा हूँ। 1954 से लेकर आज तक अनेकों सरकार आयी हैं। दिल्ली में मेट्रोपोलिटन काउंसिल भी थी, दिल्ली में उसके बाद असेम्बली भी आयी। लेकिन मेरे सामने आज तक एक भी उदाहरण नहीं है कि किसी राज्य सरकार ने नगर निगम या नगर निगमों का पैसा रोका हो। अब यदि नगर निगमों का पैसा दिल्ली सरकार की तरफ बकाया है। यदि हम 13 हजार करोड़ रुपए मांग रहे हैं। यदि मुख्य मंत्री जी से हमारे तीन मेयर्स मिलना चाहते थे, उनको

मिलना चाहिए था, उनको अपना पक्ष रखना चाहिए था। यदि इसके विरोध में इनके घर के बाहर बैठ गये।

अध्यक्ष जी, राज्य सभा में जो कुछ हुआ हमारे वरिष्ठ नेता हैं संजय सिंह जी, राज्य सभा के मेम्बर हैं, उनको पार्लियामेंट के प्रांगण में बैठना पड़ा। आपको मालूम है, अगले दिन डिपुटी चैयरमेन राज्य सभा उनके लिए चाय लेकर पहुंचे। अध्यक्ष जी, बहुत अच्छा लगता कि आदरणीय श्री अरविंद केजरीवाल जी, जो तीन मेयर बैठे हैं, उसमें एक महिला भी है, उनके लिए अगर चाय लेकर अपने हाथ से उनको चाय पिलाते तो अरविंद केजरीवाल जी का कद तो वैसे बड़ा है, लेकिन मैं कहता हूँ कि और बहुत बढ़ जाता। ये मेरा उनसे विनम्र निवेदन है जो पैसा नगर निगमों का बनता है, वो देना चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य कर्मियों को, जिनको मुख्य मंत्री जी ने कोरोना योद्ध ा माना है, हमारे सफाई कर्मचारी हैं, हमारे मलेरिया डिपार्टमेंट के कर्मचारी हैं, हमारे शिक्षक हैं, हमारे हार्टिकल्चर डिपार्टमेंट के जो कर्मचारी हैं, जो इस कोरोना काल में दिल्ली के लोगों को कोरोना महामारी से बचाने के लिए दिन–रात जुटे हुए हैं या जो लोग दिल्ली के लोगों को कोरोना से बचाते बचाते जिनकी मृत्यु हो गयी, उनको एक एक करोड़ रुपया मुख्य मंत्री जी को देना है, ये वो पैसा है। तो मैं मुख्य मंत्री जी से भारतीय जनता पार्टी विधायक दल की ओर से उनसे आग्रह करना चाहता हूँ कि वो बड़ा दिल दिखाएं। आज ही जाएं अपने घर और तीनों मेयर्स को बुलाके कहें कि हमारे आपके बीच में राजनीतिक मतभेद हो सकते हैं, लेकिन ये बेचारे सफाई कर्मचारी हैं, स्वास्थ्य कर्मी हैं, मलेरिया कर्मचारी हैं, ये शिक्षक हैं, ये बेचारे कोरोना योद्धा जिनकी मृत्यु हो गयी है या यदि उनका कुछ सरकार को हमें देना है तो हम दिल खोलके वो पैसे आपको देंगे। तो मैं समझता हूँ कि इससे एक अच्छा संदेश जाएगा।

माननीय अध्यक्षः चलिये, हो गया।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे समय दिया। मैं बहुत आभारी हूँ और अंत में आदरणीय भारद्वाज जी हम तो गोहांडी हैं, हमारा आपका रिश्ता तो... फिर मैं अंत में यही कहना चाहता हूँ कि भाई भाई का है। हम तो वही रिश्ता रखेंगे और रिश्ता जारी रहेगा। कांग्रेस तलाक दे सकती है बेटी लेकिन हम ऐसा काम

नहीं करेंगे। जो बेटी आपने दी थी कांग्रेस को, उसकी जो हमसे खिदमत बन पाएगी, जितना है। आप हमारे जिम्मे में हिस्से डालोगे, उसको ईमानदारी के साथ देंगे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत बहुत आपका धन्यवाद और माननीय मुख्य मंत्री जी जरूर जो कुछ हमने उनसे आग्रह किया है, उस पर वो जरूर हमारी तीनों नगर निगमों की मदद करेंगे। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः श्रीमान सत्येन्द्र जैन जी, ऑनरेबल यूडी मिनिस्टर।

माननीय शहरी विकास मंत्री (श्री सत्येन्द्र जैन): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, अभी जो एमसीडी है, वो किस तरह से काम कर रही है और कैसे काम नहीं कर रही है इसके बारे में दिल्ली के सभी लोग जानते हैं। एमसीडी का सिनोनिम्स जो है, वो है करप्शन। दुनिया के अंदर सबसे भ्रष्ट संस्थाओं में से... एक गलती हो गयी मुझसे। सबसे भ्रष्ट संस्थाओं में से एक नहीं, सबसे भ्रष्ट संस्था जो है, वो एक है, वो है एमसीडी। म्युनिसिपल कॉरपोरेशन ऑफ दिल्ली। तो दुनिया की सबसे भ्रष्ट संस्था जो है नंबर एक पे है एमसीडी और हमारे साथी जो विपक्ष से हैं, वो भी जानते होंगे। सौरभ जी ने भी जिक्र किया था और बहुत ही उन्होंने मॉडेस्टी से बात की। वो एमसीडी के अंदर लेंटर का रेट है। उन्होंने 10 परसेंट पे रखा एक्चुवल का। आज की डेट में साउथ दिल्ली के अंदर। साउथ दिल्ली के जो काउंसिलर हैं या एमएलए हैं, जिनको पता होगा। एक एक लेंटर का 10 लाख रुपये रेट है। एक बिल्डिंग से 50–50 लाख रुपए लेते हैं और फार्म हाउसेज पे तो पांच पांच करोड़ रुपए लेते हैं। कमर्शियल बिल्डिंग्स पे, इंडिस्ट्रियल बिल्डिंग्स पे। एक एक बिल्डिंग बनाने के दो करोड़ रुपए, तीन करोड़ रुपए सिर्फ और सिर्फ एमसीडी के काउंसलर और एमसीडी के जो अधिकारी हैं, वो मिल के लेते हैं।

पिछले इलेक्शन में हमने जनता के सामने ये प्रस्ताव भी रखा था, जिसको इन्होंने बड़ी चालाकी से नैगेट किया था। हमने कहा था भाई, दिल्ली के अंदर आम आदमी पार्टी को अगर आप एमसीडी में चुन देंगे तो हम आपको इस करप्शन से मुक्ति दिला देंगे। मुक्ति दिलाने का तरीका क्या था? बस सिम्पल सा था कि भई आप अपने प्लॉट के अंदर जो भी कुछ कर रहे हैं, कोई आदमी थोड़ा सा कवर एरिया ज्यादा

कर लेता है। थोड़ा बहुत कमरा ज्यादा बना लिया, ट्ॉयलेट ज्यादा बना लिया, है तो प्लॉट के अंदर ही। दूसरी बात ये है कि दिल्ली के अंदर 99 परसेंट लोगों ने क्योंकि एमसीडी ने 99 परसेंट लोगों को कम्प्लीशन नहीं दिया। कंप्लीशन सर्टिफिकेट नहीं हैं ऑक्यंपेंसी मतलब घर में आप जा सकते हो इसकी अनुमति नहीं दी है। इसका मतलब 99 परसेंट लोगों के घर गलत बने तो उसको रेगुलराइज किया जाता सकता है। हमने कहा था, ''भाई, रेगुलराइज करके हम सबके पैनल्टी फिक्स कर दें, जो रिश्वत आप काउंसिलर को देते हो या इनके अधिकारियों को देते हो, उसका आध ा सरकार को देना।'' वो बात को इन्होंने क्या बड़ी चालाकी से निपटाया। कहते हैं कि जी, हमारे सारे के सारे काउंसलर मैं शब्द क्या यूज करुं अनपार्लियामेंटरी होता है। उन्होंने जो कहा था, इनके नेताओं ने कहा था कि सारे के सारे काउंसलर हमारे खराब हैं। मैं थोड़ा सटक –डैश–डैश–डैश– हैं, वो सारे बदल डाले। सारे के सारे बदल दिये, जनता चकमे में आ गयी कि भाई सारे काउंसिलर बेकार थे, बेकार वाले बदल दिये, अब सही वाले आ गये। उन्हें क्या पता था कि वो ये थे, वो महान निकले। नये वाले उनसे भी कई गुणा निकले। उन्होंने उनको भी पीछे छोड़ दिया। जो अन–अथोराइज कॉलोनी के अंदर दस, बीस, पच्चीस हजार रुपये लेंटर में काम हो जाता था, अन–अथोराइज कॉलोनी में भी पचास हजार रुपए, 1 लाख रुपये लेंटर लेने लगे और मैं इस सदन के अंदर बैठ के बहुत जिम्मेदारी से कह सकता हूँ कि किसी के अंदर दम हो, एमसीडी के क्षेत्र में मकान बना के दिखाये बिना पैसे दिये। कोई अफसर बैठा हो, कोई नेता बैठा हो, कह दे मै पैसे दिये बिना करा सकता हूँ तो बता दें। हाँ, ये जरूर है कि अगर उसकी आर.एस.एस. के अंदर कोई जानकारी है, तो 10 परसेंट का डिस्काउंट मिल जाएगा। 10 परसेंट, छोड़ेंगे तब भी नहीं कहो तो मैं उन लोगों को सामने खड़ा कर सकता हूँ जिन्होंने मेरे से अप्रोच लगाया। मैंने कहा भाई आप आरएसएस के नेता हो। कहता है भाई साहब, 10 परसेंट डिस्काउंट दे रहे हैं, कुछ नहीं कर रहे हैं तो मैंने कहा, ''भाई, ऐसी पार्टी की जरूरत क्या थी?'' उनके लिए इन चक्करों में पड़ जाता हूँ। इन लोगों ने करप्शन के अलावा कुछ नहीं किया। जनता की सेवा करना नहीं चाहते हैं और हर छोटी से छोटी चीज के अंदर बड़े से बड़ा घोटाला करते हैं और जो कॉरपोरेशन घोटाला कर रही है, उसको बचाने के लिए जो दिल्ली विधान सभा के अंदर बीजेपी के एमएलए हैं, वो

झंडा लेके खड़े रहते हैं। वो मानते ही नहीं करप्शन हैं। अभी कुछ दिन पहले मुख्य मंत्री जी के आवास पर ये तीनों मेयर साहब बैठे थे। पिछली बार भी आये थे, तो मैं खुद उनसे मिलने गया। मैंने उनसे बातचीत की। मैंने कहा, ''भाई, देखो, अगर तुम्हें पैसे की दिक्कत है तो ये भ्रष्टाचार थोड़ा कम कर लो।'' तीनों चिल्लाने लगे जोर जोर से कि क्या बातें करते हो आप? भ्रष्टाचार, करप्शन हो ही नहीं सकता? आप कैसे कह सकते हो एमसीडी में करप्शन नहीं हो सकता है? मैंने कहा, ''बताओ जी, क्या करें? दिल्ली शहर के अंदर अगर आप सर्वे कराओ 99 परसेंट लोग भी अगर ये कह दें कि भ्रष्टाचार है और एक परसेंट कहें कि नहीं हैं तो हम मान लेंगे नहीं हैं? सौ परसेंट लोग कहते हैं कि भ्रष्टाचार है और तीनों के तीनों महानुभाव कहते हैं, भ्रष्टाचार नहीं है। क्योंकि हो सकता है, उनको भी कुछ पता ही होगा या हिस्सेदारी हो सकती है तो उनका भी हो सकता है कि भई हाँ, हमारे को मिलता होगा कुछ न कुछ। एमसीडी के अंदर करप्शन है और करप्शन है और करप्शन ही है, इसी वजह से एमसीडी नहीं चला पा रहे हैं। जब तुमने इलेक्शन लड़ा था। जनता से कहा था कि हम केजरीवाल से पैसे लेके सरकार चलाएंगे। एमसीडी चलाएंगे तो तुम्हें वोट क्यों देते हैं? अब जब देखो पैसे दो, पैसे दो, पैसे दो, पैसे दो, पैसे दो। अरे! दिल्ली सरकार ने, जितने पैसे शीला जी देती थी, उससे तीन गुणे पैसे दे दिये। जितने भी पैसे दो सारा का सारा खा–पी जाते हो और फिर पैसे मांगना चालू कर देते हैं। इन लोगों को अपने भ्रष्टाचार के लिए पैसा चाहिए, जनता की सेवा के लिए कुछ नहीं चाहिए, आप देख लीजिएगा ये कोई भी काम अगर करते हों कम से कम तीस, चालीस परसेंट तो उसके अंदर पैसे खा जाते हैं। एक सड़क बनाएंगे तो 50 परसेंट खा जाएंगे, बांउड्रीवाल बनाएंगे 50 परसेंट खा जाएंगे और फिर कहेंगे, पैसा नहीं है तो इन लोगों का काम है भ्रष्टाचार करना और जो हमारे सदस्य हैं। सौरभ भारद्वाज जी माननीय सदस्य ने प्रस्ताव रखा है, मेरे अनुसार बिल्कुल ठीक है और मैं उसका समर्थन करता हूं। धन्यवाद, जय हिंद।

माननीय अध्यक्षः आदरणीय मुख्य मंत्री जी।

माननीय मुख्य मंत्री (श्री अरविंद केजरीवाल): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज दिल्ली प्रदेश और दिल्ली की जनता के लिए इस विधान सभा के लिए बहुत ही

दुखःदायक दिन है कि शायद दिल्ली के इतिहास के बड़े घोटाले के ऊपर चर्चा करने के लिए हम सब लोग एकत्रित हुए हैं। दिल्ली के इतिहास का ये सबसे बड़ा स्कैम है। एक कांग्रेस थी, कांग्रेस ने बहुत बड़े बड़े घोटाले करे और उसमें उनका सबसे प्रसिद्ध घोटाला कॉमन वेल्थ घोटाला माना जाता है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने, नगर निगम में कांग्रेस को भी पीछे छोड़ दिया। लोग कह रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी का ये ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला कांग्रेस के कॉमन वेल्थ घोटाले से भी ज्यादा बड़ा घोटाला है। ये तो भला हुआ दिल्ली के लोगों का कि इन्होंने दिल्ली सरकार इनको न दी, नहीं तो पता नहीं, दिल्ली सरकार के अंदर ये क्या हाल करते और ढ़ाई हजार रुपए का ये घोटाला तो इस साल का है, एक नगर निगम का। अगर 15 साल का हिसाब–किताब लिया जाए और तीनों नगर निगमों का हिसाब–किताब लिया जाए तो पता नहीं कितने करोड़, कितने हजार करोड़ का घोटाला अभी तक इन्होंने 15 साल में किया होगा। जैसे अभी मंत्री जी बता रहे थे कि ये कोई हम नहीं कह रहे, आम आदमी पार्टी वाले कहें कि नगर निगम में घोटाला है तो कहा जाएगा कि भई राजनीति कर रहे हैं। अभी अगर बाहर चल के सड़क में पहले जो 10 आदमी मिलें, उनसे पूंछ लो जी, ''नगर निगम में भ्रष्टाचार है कि नहीं?'' 10 के 10 आदमी कहेंगे, ''हाँ जी, नगर निगम में बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार है और उन्हीं से पूछ लो जी, ''दिल्ली सरकार के अंदर भ्रष्टाचार है,'' कहेंगे, ''नहीं जी, बड़ी ईमानदार सरकार है।'' दिल्ली के अंदर हर आदमी मानता है कि अगर आपने कोई मकान बनाना है, लेंटर डालना है तो लेंटर डालने के कोई भी जैसे अभी मंत्री जी ने बताया कि आरएसएस के 10 परसेंट डिस्काउंट है, बाकी कोई डिस्काउंट नहीं है। हर आदमी को पैसे देने पड़ते हैं, हर आदमी को और बताते हैं 5 हजार से 10 हजार करोड़ रुपए सालाना का ये लेंटर–लेंटर के घोटाले का अमाउंट है। केवल लेंटर का घोटाला अगर ये बंद कर दें नगर निगम वाले तो 5 से 10 हजार करोड़ रुपए का रेवेन्यू इनका इससे आ सकता है और ये बीजेपी खुद भी मानती है। पिछली बार एमसीडी के चुनाव के पहले इन्होंने खुद कहा कि भई हमारे सारे के सारे नगर निगम के काउन्सलर अभी तक जो है, वो भ्रष्ट थे। हम मानते हैं और अब हम सब की टिकट बदलते हैं। तो अगर तुमने टिकट बदली सबकी और तुमने खुद जनता के सामने माना कि सारे के सारे भ्रष्ट थे तो दो–चार लोगों को जेल में तो भेजना चाहिए था। दो–चार लोगों को सजा

तो देनी चाहिए थे ताकि जो नये आये, उनके ऊपर एक ये कह रहे हैं कि भई, जैसे पुराने वाले जेल गये वैसे तुम भी जेल जाओगे अगर। अब ये नये वालों को लग रहा है, ''यार, होता तो कुछ है नहीं। टिकट कटनी है अब।'' अब ये एक पद्धति बन गयी है बीजेपी के अन्दर कि भई पांच साल का मौका मिलेगा। पांच साल में जो लूटना है, लूट लो। अब ये जो नये वाले आये हैं, एक साल बच गया। लोग बताते हैं मेरे पास आते हैं, ''जी, जम के लगे हुए है।'' मतलब कोई सीमा ही नहीं है कि भई, एक साल है। इस बार इनकी भी टिकट कटनी है। सबको नई टिकट मिलनी है। सारे ये नये वाले भी लगे हुए हैं। तो ये खुद ही मानते हैं कि बहुत ज्यादा घोटाला इनके काउन्सलर कर रहे हैं। नहीं तो एक–एक काउन्सलर जब काउन्सलर बनता है तो साईकिल पर चलता है और एक साल के अन्दर उसकी बड़ी–बड़ी गाड़ियॉ आ जाती हैं। वो कहाँ से आता है? बड़े–बड़े बंगले बन जाते हैं, जमीनें आ जाती हैं। कहाँ से आता है ये सारा पैसा? ये ढ़ाई हजार करोड़ किसका पैसा था? ये सफाई कर्मचारियों का पैसा था। इससे सफाई कर्मचारियों के सारे एरियर... बेचारे सफाई कर्मचारी कब से अपने एरियर के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। अगर ये ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला नहीं होता तो ये सफाई कर्मचारियों को उनकी तन्ख्वाह मिल सकती थे। उनको उनके सारे एरियर्स मिल सकते थे। अगर ये ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला नहीं होता तो जो डॉक्टर जिनको डॉक्टरों को तीन–तीन, चार–चार, छः–छः महीने से तन्ख्वाह नहीं मिल रही, जिन्होंने बेचारों ने कोविड के टाइम पर अपनी जान दॉव पर लगा के लड़ाई लड़ी, जनता की सेवा की। उन सबको उनकी तन्ख्वाहें टाइम पर मिल सकतीं थीं। दिल्ली सरकार एक–एक पैसा बचा रही है। एक–एक पैसा हम हर चीज में एक–एक पैसा बचाते हैं। सारी जनता जानती है, हमारा एक फ्लाईओवर बनता है। अब तो कितने बन लिये। एक ही का उदाहरण दूँगा, सवा तीन सौ करोड़ का फ्लाईओवर बनना था, हमने दो सौ करोड़ में पूरा कर दिया। एक–एक पैसा बचा–बचाके और इसी वजह से हम जनता को इतनी सहूलियतें दें पा रहे हैं कि बिजली भी मुफ्त कर दी, पानी भी मुफ्त कर दिया, दवाई भी मुफ्त कर दी, स्कूल भी मुफ्त कर दिये। महिलाओं का सफर भी मुफ्त कर दिया। कितनी वो इसलिए कि क्योंकि हम एक–एक पैसा बचा रहे हैं और इन्होंने एक पुल बनाया वो रानी झॉसी फ्लाईओवर। कितने का बनना था? नहीं, 180 करोड़ का बनना था, 187 का

और शायद 730 करोड़ का बना पुरा हुआ। बनते–बनते 187 करोड़ का फ्लाईओवर जो बनना था, वो बनके 730 करोड़ का पूरा हुआ। हमारा सवा तीन सौ करोड़ का फ्लाईओवर दो सौ करोड़ का पूरा हुआ। फिर कहते हैं, ''भ्रष्टाचार नहीं है एमसीडी के अन्दर।'' बताओ, ये भ्रष्टाचार नही तो और क्या चीज है? इतना भ्रष्टाचार कर रखा है। अगर यहाँ पर गिनाने लग जायें तो पूरी रात बीत जायेगी यहाँ पर। ये सारा पैसा जनता का पैसा है। जनता टैक्स देती है। दिल्ली की जनता कड़ी मेहनत करके रात–दिन मेहनत करके अपने बच्चों का पेट काट के नगर निगम को टैक्स देती है। उस जनता के पैसे की चोरी हुई है। अगर ये ढ़ाई हजार करोड़... मैं कैलकुलेट कर रहा था, अगर ये ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला नहीं होता, इसमें भाई साहब, साढ़े सात हजार बेड के नये अस्पताल बन सकते थे। इसमें साढ़े बारह हजार मोहल्ला क्लीनिक बन सकते थे। साढ़े बारह हजार मोहल्ला क्लीनिक दिल्ली में बन सकते

थें। अगर ये ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला नहीं होता तो। लेकिन बड़े दुःख की बात ये है कि जब सीबीआई की मांग की। सीबीआई की मांग करने के लिए जब राघव चड्ढा, उन्होंने कहा, ''मैं अमित शाह जी से मिलने के लिए जा रहा हूँ।'' तो उनके घर पहुंच गयी सारी दिल्ली पुलिस। बलात्कारियों को पकड़ने के लिए पुलिस नहीं जाती। राघव चड्ढा को पकड़ने के लिए दिल्ली पुलिस। दिल्ली पुलिस ने इनको इनके घर से गिरफ्तार कर लिया। ऋतुराज को भी किया था। 6 लोगों को उनके घर से गिरफ्तार कर लिया। बताओ? क्या अमित शाह जी से देश की जनता नहीं मिल सकती? चुने हुए प्रतिनिधि नहीं मिल सकते? अगर अमित शाह जी भी इनके साथ बैठ के एक कप चाय पी लेते तो बड़ा अच्छा इनका मन लग जाता। अब देखो, बेचारा शक्ल से गुण्डा लगता है। शरीफ आदमी, भोला सा लड़का लगता है। अमित शाह जी का क्या बिगाड़ लेता ये? बैठ के चाय पी लेते बच्चे के साथ। बच्चे के साथ बैठ के चाय पी लेते, खुश हो जाता। हद तो तब हो गयी। अतिशी मार्लेना, पूरी दुनिया इनके काम की चर्चा करती है कि इस महिला ने गजब का काम किया है शिक्षा के उपर। देश के लिए इतना बड़ा कन्ट्रीब्यूशन किया है। वो एक चुनी हुई विधायक है। विधायक का एक प्रोटोकॉल होता है। वो एलजी साहब से मिलने के लिए गयी और उनको अपराधियों की तरह घसीट के, अपराधियों की तरह, मैंने देखा

वो वीडियो... मतलब रोना आ गया। अपराधियों की तरह घसीट के उसको बस में डाल के और उनको उठाके ले गये। एक कप चाय एलजी साहब अगर इनके साथ भी पी लेते, तो ये तो सही नहीं है। आप कह रहे हो कि अगर ये घोटाला साबित हो गया तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। सीबीआई की जांच करा दो। सीबीआई तो आप ही के पास है। सीबीआई की जांच क्यों नहीं कराते? हम छाती ठोक के कह रहे हैं। हमारी सारी फाइलों की सीबीआई ने जांच कर ली। सीबीआई ने मेरे दफ्तर पर रेड मारी। सीबीआई ने मेरे घर पर रेड मारी। इन्कम टैक्स वालों ने दो बार इसकी रेड मार ली। सत्येन्द्र जैन की रेड करी। दो बार आ चुके हैं इसके यहाँ, सत्येन्द्र जैन के यहाँ। दो बार रेड मार चुके। हमने तो हमेशा उनको चाय पिलायी। जब सीबीआई वाले आये, उनको भी चाय पिलायी और जब इनकम टैक्स वाले आये, उनको भी चाय पिलायी। हमने कभी मना नहीं किया क्योंकि दाल में कुछ काला है ही नही, दाल पूरी साफ है। दिल में कुछ काला नहीं है। यहाँ तो जैसे ही हमने कहा। हमारी सीबीआई की जांच कराओ तो जिन्होंने चोरी की, उनको तो नहीं पकड़ा। जिन्होंने मांग की, उनको उनके घर से उठवा लिया। तो दाल ही काली है पूरी की पूरी इसमें, तो सीबीआई की जांच करा लो। सीबीआई में साफ हो जायेगा। अगर जांच हुई सीबीआई में। पता चल जायेगा भाई ढ़ाई हजार करोड़ का घोटाला हुआ है। तो ये 15 साल का काला युग था भारतीय जनता पार्टी का, नगर निगम का और इस काले युग का अब अन्त होना है। पाप का घड़ा जब भर जाता है तो एक साल और बचा है और मुझे पूरी उम्मीद है कि अब दिल्ली के दो करोड़ लोग मिल के इस काले युग का अंत करेंगे। दिल्ली के सामने दो मॉडल है। एक बीजेपी का मॉडल है जो एमसीडी में है और एक आदमी का मॉडल है जो दिल्ली सरकार में है। इस बार फरवरी में दिल्ली में चुनाव हुए थे। दिल्ली के लोगों ने दोनों मॉडल में से एक मॉडल चुनना था तो दिल्ली के लोगों ने आम आदमी पार्टी का मॉडल चुन के 62 सीट दी और दिल्ली के लोगों ने भाजपा का मॉडल चुनके 8 सीट दी। अब मैं उम्मीद करता हूँ कि आने वाले समय में इस मॉडल को पूरी तरह से दिल्ली के लोग नकारेंगे। मुझे बेहद दुःख है जो ये कह रहे हैं, ''13000 करोड़ देने हैं, 13000 करोड़ देने हैं, 13000 करोड़ देने हैं।'' नगर निगम के लोग कोर्ट में भी हो आये। कोर्ट में एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार नहीं, पता नहीं कितनी बार ऑर्डर हो चुके की भई जितना पैसा दिल्ली सरकार

ने देना था, सारा दे दिया। तो जब कोर्ट ने कह दिया, हाईकोर्ट ने भी कह दिया, सुप्रीम कोर्ट ने भी कह दिया कि भई जितना पैसा बनता था, सारा दे दिया तो अब ये जब आ रहे हैं तो कह रहे हैं, ''जी, ढ़ाई हजार करोड़ तो खा लिया और दे दो, और दे दो। तेरह हजार करोड़ और दे दो। एक ही साल बचा है। एक ही साल बचा है जी। जल्दी दो, जल्दी दो। तेरह हजार करोड़ बचा है और दे दो।'' हाय–हाय लगी पड़ी है। हाय–हाय लगी पड़ी है। और उनको अब नजर आ रहा है, अगली बार टिकट तो मिलनी नहीं है तो सारे बेतहाशा तेरह हजार करोड़ दो जी। तेरह हजार करोड़ दो जी। मेरे पास इतने फोन आ लिये लोगों के। बोले, ''जी, हमें नहीं पता, बनता है कि नहीं बनता है इनका। लेकिन अगर बनता भी हो ना तो भी मत देना। अब ये सारा पैसा खा जायेंगे।'' बहुत दुःख होता है कि अभी तीनों एमसीडी पर ताला लगा पड़ा है। न तो वहाँ कमिश्नर हैं और न वहाँ मेयर हैं। मेयर यहाँ धरने पर बैठें हैं और कमिश्नरों की तो इन्होंने नियुक्ति नहीं कर रखी है। तो तीनों एमसीडी के ऊपर ताला लगा पड़ा है। दिल्ली की जनता का क्या होगा? हमें बहुत दुःख होता है। मैं दिल्ली की जनता से अपील करना चाहता हूँ कि एक साल के बाद चुनाव है। अब बस बहुत हो गया। इन लोगों का ड्रामा, इन लोगों की नौटंकी, इन लोगों की राजनीति, गन्दी राजनीति। अब इससे दिल्ली की जनता त्रस्त हो चुकी है। इसको खत्म करना चाहती है और मैं उम्मीद करता हूँ कि अगले साल जब भी चुनाव होंगे इससे दिल्ली की जनता को मुक्ति मिलेगी।

अध्यक्ष महोदय, जो सौरभ भारद्वाज जी ने प्रस्ताव रखा है उसका मैं पूरी तरह से समर्थन करता हूँ।

माननीय अध्यक्षः अब श्री सौरभ भारद्वाज जी, माननीय सदस्य द्वारा प्रस्तुत संकल्प सदन के सामने हैं:

जो इसके पक्ष में हैं, वो हाँ कहें।

जो इसके विरोध में हैं, वो न कहें।

(ध्वनिमत हाँ पक्ष में होने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता।

संकल्प स्वीकार हुआ।

आज माननीय सदस्य श्री रघुविन्दर शौकीन जी का जन्म दिन है। शौकीन जी कहाँ हैं। उनको बोल देना। आज सदन ने मनाया है। मैं इस अवसर पर उनको अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ और कामना करता हूँ कि अपने व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन में निरन्तर सफलता प्राप्त करें तथा उनकी दीर्घायु हो।

सदन को अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित करने से पहले मैं सदन के नेता माननीय मुख्य मंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी, माननीय उप मुख्य मंत्री श्री मनीष सिसौदिया जी, सभी मंत्रीगण, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। इसके अलावा सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए विधान सभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ विभिन्न विभागों और सुरक्षा एजेन्सियों का तथा मीडिया का भी धन्यवाद करता हूँ। यहाँ विशेष रूप से मैं दिल्ली पुलिस ने जो व्यवस्था की है, उसका बहुत–बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वो राष्ट्रगान के लिए अपने स्थान पर खड़े होंगे।

(राष्ट्रगान)

माननीय अध्यक्षः इससे पहले कि सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित की जाए... एक सूचना है कि भोजन की व्यवस्था की गयी है और आप सभी भोजन पर सादर आमंत्रित हैं। अब सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित की जाती है। सभी का बहुत–बहुत धन्यवाद।

(माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की गयी।

..समाप्त...